Sukhmani-Sahib

सुखमनी का माहात्म्य

पंचम गुरु श्री अर्जुन देव जी के समक्ष जब गुरु सिखों के मनोभाव को लेकर बाबा बुद्‌ढा जी ने उनसे प्रार्थना की कि, गुरुदेव! किसी ऐसी सरलतम वाणी की रचना करो जिसके पाठ से मानव जाति का कल्याण हो। जो श्वास हम प्रतिदिन (चौबीस हजार श्वास-चौबीस घंटों में) लेते हैं; वह सफल हो जायें। श्री गुरु अर्जुनदेव जी ने विनती स्वीकार करके श्री अमृतसर के रामसर (सरोवर) के निकट बैठकर सुखमनी साहिब का उच्चारण किया और संगतों से कहा कि जो भी मनुष्य प्रात:काल स्नान करके शुद्ध मनोभाव से नित्यप्रति मन लगाकर तथा अर्थ एवं भाव समझकर पढ़ेगा तो यह वाणी उसका कल्याण अवश्य करेगी। गुरुसिख चाहे तो अन्य किसी वाणी से वंचित रह जाये परन्तु सुखमनी के पाठ से वंचित न रहे।

'सुखमनी' की वाणी में चौबीस हजार अक्षर हैं। हम प्रतिदिन चौबीस हजार श्वास लेते हैं। अत: इन चौबीस हजार श्वासों की सफलता के निमित्त सुखमनी का एक पाठ है।

इक्यावन पाठ सुखमनी के कर लेने पर एक बार के सम्पूर्ण श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के पाठ का फल प्राप्त होता है। गुरु सेवक की या भक्त की कोई भी मनोभिलाषा हो वह सुखमनी के इक्यावन पाठ कर लेने पर अवश्य पूरी होती है।

श्री सुखमनी के पाठ को पढ़ने या सुनने से मानसिक व शारीरिक रोग दूर होते हैं। मानसिक रोगों से छुटकारे के लिए ध्यान की अनेकों विधियाँ बताई गई हैं। अत: सुखमनी के पाठ द्वारा ध्यान-योग से जुड़ने के कारण मनुष्य की मानसिक चिंताओं से मुक्ति होती है। भयानक शारीरिक व्याधियों एवं आर्थिक चिंताओं से मुक्ति के लिए भी सुखमनी का पाठ अमृत तुल्य है। चूँकि सुखमनी के पाठ से साधक का मनोबल बढ़ता है; इस कारण से टोना-टोटका-ताबीज का प्रभाव भी पाठ करने वाले पर नहीं होता है। कलियुग में अनेकानेक चिंताएँ हैं परन्तु सुखमनी के पाठ करने वाले पर कलियुग का प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि साधक का मन ईश्वरोन्मुख होकर सांसारिक विषय वस्तुओं में नहीं रमता। जब तक मनुष्य सांसारिक भोगों में

लस है तभी तक दुःख है और जब वह किसी उपभोग के लिए लालायित नहीं होगा तो वह चिंतित या दुःखी भी नहीं होता। यही भाव सुखमनी का मूल-भाव है, जो मनुष्य को मोक्ष की ओर ले जाता है। जब मनुष्य की इच्छायें ही समाप्त हो जायें तो उसके पुनर्जन्म का कारण ही नहीं रह जाता (मनुष्य अपनी इच्छाओं की पूर्ति हेतु ही जन्मता-मरता रहता है)। यही मनुष्य की उच्चतम अवस्था है जिसे वह धर्म के द्वारा प्राप्त कर सकता है। जो भी प्राणी सुखमनी का पाठ करेगा वह भवसागर से पार होगा—यही पाठ की मूल धारणा है।

सुखमनी के पाठ की ही एक पंक्ति में—'प्रभ कै सिमरनि रिधि सिधि नउ निधि' अर्थात् प्रभु को आठों पहर सिमरने से ही ऋद्धि, सिद्धि और नौ निधियों की प्राप्ति है।

सुख - मनी = मन को सुख देने वाली वाणी (मन जब सांसारिक वासनाओं से हटकर प्रभु चरणों में लीन होता है तभी सच्चा सुख अनुभव करता है)।

सुख + मनी = यह मान्यता मानकर आया कि नाम जपूँगा। यह वाणी नाम जपने की प्रेरणा देती है।

सुख + मनी = इस वाणी को मानकर पाठ करने से सुख ही सुख प्राप्त होते हैं।

सुखं + मनी = जैसे सर्प के सिर पर मणि प्रकाशमान रहती है वैसे ही यह समस्त सुखों का प्रकाश करने वाली वाणी है।

सुखमनी सुख अंम्रित प्रभ नामु।
भगत जना कै मन बिस्राम॥

सुखमनी प्रभु सुमिरन का ऐसा अमृत है कि पाठ करने वाले भक्त का मन विश्रांति को प्राप्त करता है।

सुखमनी पढ़िए दिन-राती।
यह है सब सुखों की दाती॥

सुखमनी का पाठ करके जिन-जिन व्यक्तियों ने अपार सुख प्राप्त किये उनके बारे में अनेकों कथाएँ प्रचलित हैं लेकिन हमारा मत है कि सुखमनी के पाठ के माध्यम से

भौतिक उपलब्धियों व सुखों को गिनाना इसकी महत्ता को कम करना होगा क्योंकि वास्तविक सुख तो मानसिक सुख है जिसके आगे अन्य सभी सांसारिक प्राप्तियाँ तुच्छ हैं। अक्षुण्ण एवं परम सुख प्रभु नाम में लीन संत ही जान सकता है जिसको व्यक्त कर पाना या उस सुख का मानव बुद्धि से आकलन करना असम्भव है। स्वयं सुखमनी में प्रभु के सुमिरन की महानता का ही पुनः-पुनः उद्घोष है। 'दीन दरद दुख भंजना' रूप यह सुखमनी 'पूरा प्रभु आराधिया पूरा जाका नाउ नानक पूरा पाइया पूरे के गुण गाउ' अर्थात् पूर्ण प्रभु को स्मरण करने से ही पूर्णता मिलती है। इसलिए इस मनुष्य को भी पूरे के गुण गाकर पूर्णता की ओर जाने की प्रेरणा देती है। अतः आओ, हम सब मिलकर ध्यानयोग से मनोबल बढ़ाकर मानसिक चिन्ताओं को दूर करने वाली वाणी का अध्ययन करें।

✣ सलोकु ✣

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि

आदि गुरए नमह
जुगादि गुरए नमह।
सतिगुरए नमह
श्री गुरदेवए नमह।

✣ शलोक ✣

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि

मेरी सबसे बड़े (अकालपुरुष) को नमस्कार है जो (सब का) आदि है और जो युगों के आदि से है। सतिगुरु को मेरी नमस्कार है, श्रीगुरुदेवजी को नमस्कार है।

❖ असटपदी ❖

सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ।
कलि कलेस तन माहि मिटावउ।
सिमरउ जासु बिसुंभर एकै।
नामु जपत अगनत अनेकै।
बेद पुरान सिंम्रिति सुधाख्यर।
कीने राम नाम इक आख्यर।
किनका एक जिसु जीअ बसावै।
ता की महिमा गनी न आवै।
कांखी एकै दरस तुहारो।
नानक उन संगि मोहि उधारो।
सुखमनी सुख अंम्रित प्रभ नामु।
भगत जना कै मनि बिस्राम।रहाउ।

❖ अष्टपदी ❖

मैं (अकालपुरुष का नाम) स्मरण करूँ और स्मरण कर सुख प्राप्त करूँ; शरीर में (जो) दुःख-विकार (हैं, उन्हें) मिटा लूँ। जिस एक जगत्-पालक (हरि) का नाम अनेकों तथा अनगिनत (जीव) जपते हैं, मैं (भी उसे) स्मरण करूँ। वेद, पुराण तथा स्मृतियों ने एक अकालपुरुष के नाम को ही सबसे पवित्र नाम माना है। जिसके हृदय में (अकालपुरुष अपना नाम) थोड़ा सा भी बसाता है, उसकी प्रशंसा व्यक्त नहीं हो सकती। (हे अकालपुरुष!) जो मनुष्य तेरे दर्शन के इच्छुक हैं, उनकी संगति में (रखकर) मुझ नानक को बचा लो। प्रभु का अमर करनेवाला तथा सुखदायक नाम (सब) सुखों की मणि है, इसका ठिकाना भक्तों के हृदय में है॥ रहाउ॥

प्रभ कै सिमरनि गरभि न बसै।
प्रभ कै सिमरनि दूखु जमु नसै।
प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै।
प्रभ कै सिमरनि दुसमनु टरै।
प्रभ सिमरत कछु बिघनु न लागै।
प्रभ कै सिमरनि अनदिनु जागै।
प्रभ कै सिमरनि भउ न बिआपै।
प्रभु कै सिमरनि दुखु न संतापै।
प्रभ कै सिमरनि साध कै संगि।
सरब निधान नानक हरि रंगि।

प्रभु के स्मरण करने से (जीव) जन्म में नहीं आता, (जीव का) दुःख तथा यम (का भय) दूर हो जाता है, मौत परे हट जाती है, (विकार-रूपी) दुश्मन टल जाता है। प्रभु को स्मरण करने से कोई रुकावट नहीं पड़ती, (क्योंकि) प्रभु का स्मरण करने से (मनुष्य) हर समय (विकारों से) सचेत रहता है। प्रभु का स्मरण करने से (कोई) भय (जीव पर) दबाव नहीं डाल सकता और (कोई) दुःख व्याकुल नहीं करता। अकालपुरुष का स्मरण गुरमुख की संगति में (मिलता है), (और जो मनुष्य स्मरण करता है, उसे) हे नानक! अकालपुरुष के प्रेम में (ही) (दुनिया के) सारे खजाने (प्रतीत होते) हैं।

प्रभ कै सिमरनि रिधि सिधि नउ निधि।
प्रभ कै सिमरनि गिआनु धिआनु ततु बुधि।
प्रभ कै सिमरनि जप तप पूजा।
प्रभ कै सिमरनि बिनसै दूजा।
प्रभ कै सिमरनि तीरथ इसनानी।
प्रभ कै सिमरनि दरगह मानी।
प्रभ कै सिमरनि होइ सु भला।
प्रभ कै सिमरनि सुफल फला।
से सिमरहि जिन आपि सिमराए।
नानक ता कै लागउ पाए।

प्रभु के स्मरण में ही ऋद्धि सिद्धि तथा नौ निधियाँ हैं, प्रभु-स्मरण में ही ज्ञान, सुरति का टिकाव तथा जगत् के मूल (हरि) की समझवाली बुद्धि है। प्रभु के स्मरण में ही जप-तप तथा पूजा हैं, (क्योंकि) स्मरण करने से प्रभु के अतिरिक्त उस जैसी किसी दूसरी सत्ता के अस्तित्व का विचार ही दूर हो जाता है। स्मरण करने से आत्मा, तीर्थ का स्नान करने वाला हो जाता है और दरबार में प्रतिष्ठा मिलती है; जगत् में जो हो रहा है, भला प्रतीत होता है और मनुष्य-जन्म का उच्च मनोरथ सिद्ध हो जाता है। (नाम) वही स्मरण करते हैं, जिन्हें प्रभु आप प्रेरित करता है, (इसलिए, कह) हे नानक! मैं उन (स्मरण करनेवालों) के चरण-स्पर्श करूँ।

प्रभ का सिमरनु सभ ते ऊचा।
प्रभ कै सिमरनि उधरे मूचा।
प्रभ कै सिमरनि त्रिसना बुझै।
प्रभ कै सिमरनि सभु किछु सुझै।
प्रभ कै सिमरनि नाही जम त्रासा।
प्रभ कै सिमरनि पूरन आसा।
प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाई।
अंम्रित नामु रिद माहि समाइ।
प्रभ जी बसहि साध की रसना।
नानक जन का दासनि दसना।

प्रभु का स्मरण सारे (कामों) में भला है; प्रभु का स्मरण करने से बहुत सारे (जीव) (विकारों से) बच जाते हैं। प्रभु का स्मरण करने से (माया की) प्यास मिट जाती है, (क्योंकि माया के) हर एक (काल) की समझ पड़ जाती है। प्रभु का स्मरण करने से यमों का भय समाप्त हो जाता है, और, (जीव की) आशा पूर्ण हो जाती है, (आकांक्षाओं से मन तृप्त हो जाता है)। प्रभु का स्मरण करने से मन की मैल दूर हो जाती है और मनुष्य के हृदय में (प्रभु का) अमर करनेवाला नाम टिक जाता है। प्रभुजी गुरमुख मनुष्यों की जिह्वा पर बसते हैं। (कहो) हे नानक! (मैं) गुरमुखों के सेवकों का सेवक (बनूँ)।

प्रभ कउ सिमरहि से धनवंते।
प्रभ कउ सिमरहि से पतिवंते।
प्रभ कउ सिमरहि से जन परवान।
प्रभ कउ सिमरहि से पुरख प्रधान।
प्रभ कउ सिमरहि सि बेमुहताजे।
प्रभ कउ सिमरहि सि सरब के राजे।
प्रभ कउ सिमरहि से सुखवासी।
प्रभ कउ सिमरहि सदा अबिनासी।
सिमरन ते लागे जिन आपि दइआला।
नानक जन की मंगै रवाला।

जो मनुष्य प्रभु को स्मरण करते हैं, वे धनवान हैं, और वे प्रतिष्ठित हैं। जो मनुष्य प्रभु को स्मरण करते हैं, वे प्रसिद्ध हुए हैं, और वे (सबसे) भले हैं। जो मनुष्य प्रभु को स्मरण करते हैं वे किसी के आश्रित नहीं, वे (तो बल्कि) सब के बादशाह हैं। जो मनुष्य प्रभु को स्मरण करते हैं वे सुखी बसते और सदा के लिए जन्म-मरण से रहित हो जाते हैं, जिन पर प्रभु आप मेहरबान (होता) है; हे नानक! (कोई भाग्यशाली) इन गुरमुखों की चरणधूलि माँगता है।

प्रभ कउ सिमरहि से परउपकारी।
प्रभ कउ सिमरहि तिन सद बलिहारी।
प्रभ कउ सिमरहि से मुख सुहावे।
प्रभ कउ सिमरहि तिन सूखि बिहावै।
प्रभ कउ सिमरहि तिन आतमु जीता।
प्रभ कउ सिमरहि तिन निरमल रीता।
प्रभ कउ सिमरहि तिन अनद घनेरे।
प्रभ कउ सिमरहि बसहि हरि नेरे।
संत क्रिपा ते अनदिनु जागि।
नानक सिमरनु पूरै भागि।

जो मनुष्य प्रभु को स्मरण करते हैं वे परोपकारी बन जाते हैं, उन पर (मैं) सदा बलिहारी हूँ। जो मनुष्य प्रभु को स्मरण करते हैं उनके मुख सुन्दर हैं, उनकी (उम्र) सुख में बीतती है। जो मनुष्य प्रभु को स्मरण करते हैं, वे अपने आपको जीत लेते हैं और उनकी जिन्दगी बिताने का तरीका पवित्र हो जाता है। जो मनुष्य प्रभु को स्मरण करते हैं, उन्हें खुशियाँ ही खुशियाँ हैं, (क्योंकि) वे प्रभु के दरबार में बसते हैं। संतों की कृपा से ही यह हरवक्त (स्मरण की) जाग आ सकती है; हे नानक! स्मरण (की देन) बड़े भाग्य से (मिलती है)।

प्रभ कै सिमरनि कारज पूरे।
प्रभ कै सिमरनि कबहु न झूरे।
प्रभ कै सिमरनि हरि गुन बानी।
प्रभ कै सिमरनि सहजि समानी।
प्रभ कै सिमरनि निहचल आसनु।
प्रभ कै सिमरनि कमल बिगासनु।
प्रभ कै सिमरनि अनहद झुनकार।
सुखु प्रभ सिमरन का अंतु न पार।
सिमरहि से जनजिन कउ प्रभ मइआ।
नानक तिन जन सरनी पइआ।

प्रभु का स्मरण करने से (सारे) काम पूर्ण हो जाते हैं और मनुष्य कभी चिन्ता के वशीभूत नहीं होता। प्रभु के स्मरण करने से, मनुष्य अकालपुरुष के गुण ही उच्चारित करता है और सहज अवस्था में टिका रहता है। प्रभु का स्मरण करने से मनुष्य का (मन-रूपी) आसन डोलता नहीं और उसका (हृदय का) कमल-पुष्प खिला रहता है। प्रभु का स्मरण करने से (मनुष्य के भीतर) निरंतर संगीत (जैसा) अनहदनाद (होता रहता) है, प्रभु के स्मरण से सुख (पैदा होता) है, वह (कभी) समाप्त नहीं होता। वही मनुष्य (प्रभु को) स्मरण करते हैं, जिन पर प्रभु की कृपा होती है; हे नानक! (कोई भाग्यशाली) उन (स्मरण करनेवाले) जनों की शरण लेता है।

हरि सिमरनु करि भगत प्रगटाए।
हरि सिमरनि लगि बेद उपाए।
हरि सिमरनि भए सिध जती दाते।
हरि सिमरनि नीच चहु कुंट जाते।
हरि सिमरनि धारी सभ धरना।
सिमरि सिमरि हरि कारन करना।
हरि सिमरनि कीओ सगल अकारा।
हरि सिमरन महि आपि निरंकारा।
करि किरपा जिसु आपि बुझाइआ।
नानक गुरमुखि हरि सिमरनु तिनि पाइआ।

प्रभु का स्मरण करके भक्त (जगत् में) मशहूर होते हैं, स्मरण में ही जुड़कर (ऋषियों ने) वेद (आदि धार्मिक ग्रन्थ) रचे। प्रभु के स्मरण द्वारा ही मनुष्य सिद्ध बन गए, यती बन गए, दाता बन गए, स्मरण के प्रभाव से नीच मनुष्य सारे संसार में प्रकट हो गए। प्रभु के स्मरण ने सारी धरती को आसरा दिया हुआ है; (इसलिए, हे भाई!) जगत् के कर्त्ता प्रभु को सदा स्मरण कर। प्रभु ने स्मरण के लिए सारा जगत् बनाया है; जहाँ स्मरण है वहाँ निरंकार आप बसता है। कृपा करके जिस मनुष्य को (स्मरण करने की) समझ देता है, हे नानक! उस मनुष्य ने गुरु के द्वारा स्मरण (की देन) प्राप्त कर ली है।

ੴ

सलोकु

दीन दरद दुख भंजना।
घटि घटि नाथ अनाथ।
सरणि तुम्हारी आइओ
नानक के प्रभ साथ।

✣ श्लोक ✣

हे दीनों के दर्द तथा दुःख नष्ट करनेवाले प्रभु! प्रत्येक शरीर में व्यापक प्रभु, अनाथों के नाथ रि। गुरु नानक का पल्ला पकड़कर मैं तेरी शरण ाया हूँ।

✣ असटपदी ✣

जह मात पिता सुत मीत न भाई।
मन ऊहा नामु तैरै संगि सहाई।
जह महा भइआन दूत जम दलै।
तह केवल नामु संगि तैरै चलै।
जह मुसकल होवै अति भारी।
हरि को नामु खिन माहि उधारी।
अनिक पुनह चरन करत नही तरै।
हरि को नामु कोटि पाप परहरै।
गुरमुखि नामु जपहु मन मेरे।
नानक पावहु सूख घनेरे।

❖ अष्टपदी ❖

जहाँ माँ, पिता, मित्र, भाई, कोई (साथी) नहीं, वहाँ हे मन! (प्रभु) का नाम तेरे साथ सहायता करनेवाला (है), जहाँ बड़े भयंकर यमदूतों का दल है, वहाँ तेरे साथ केवल प्रभु का नाम ही जाता है। जहाँ बड़ी भारी विपत्ति होती है, (वहाँ) प्रभु का नाम निमिषमात्र में बचा लेता है। अनेकों धार्मिक रस्में करके भी (मनुष्य पापों से) नहीं बचता, (पर) प्रभु का नाम करोड़ों पापों का नाश कर देता है। (इसलिए, हे मन!) गुरु की शरण लेकर नाम जप; हे नानक! (नाम के प्रभाव से) बड़े सुख पाएगा।

सगल स्रिसटि को राजा दुखीआ।
हरि का नामु जपत होइ सुखीआ।
लाख करोरी बंधुन परै।
हरि का नाम जपत निसतरै।
अनिक माइआ रंग तिख न बुझावै।
हरि का नामु जपत आघावै।
जिह मारगि इहु जात इकेला।
तह हरि नामु संगि होत सुहेला।
ऐसा नामु मन सदा धिआईऐ।
नानक गुरमुखि परम गति पाईऐ।

(मनुष्य) सारी दुनिया का राजा (होकर भी) दुखी (रहता है) लेकिन प्रभु का नाम जपने से सुखी (हो जाता है); (क्योंकि) लाखों कमा कर भी (माया की प्यास में) बंधन में पड़ता है, प्रभु का नाम जपकर मनुष्य पार उतर जाता है; माया की अनगिनत खुशियाँ होते हुए भी (और माया की) प्यास नहीं बुझती, (पर) प्रभु का नाम जपने से (मनुष्य माया से) तृप्त हो जाता है। जहाँ जीव अकेला जाता है, वहाँ प्रभु का नाम इसके साथ सुख देनेवाला होता है। (इसलिए) हे मन! ऐसा नाम सदा स्मरण कर, हे नानक! गुरु के द्वारा (नाम जपने से) ऊँचा स्थान मिलता है।

छूटत नही कोटि लख बाही।
नामु जपत तह पारि पराही।
अनिक बिघन जह आइ संघारै।
हरि का नामु ततकाल उधारै।
अनिक जोनि जनमै मरि जाम।
नामु जपत पावै बिस्राम।
हउ मैला मलु कबहु न धोवै।
हरि का नामु कोटि पाप खोवै।
ऐसा नामु जपहु मन रंगि!
नानक पाईऐ साध कै संगि।

लाखों करोड़ों भाइयों के होते हुए भी मनुष्य जिस दीन अवस्था से मुक्त नहीं हो सकता, वहाँ (प्रभु का) नाम जपने से (जीव) पार उतर जाते हैं। जहाँ अनेकों मुसीबतें आ दबाती हैं, (वहाँ) प्रभु का नाम तुरन्त बचा लेता है। (जीव) अनेक योनियों में जन्मता है, मरता है (फिर) जन्मता-मरता है (लेकिन) नाम जपने से (प्रभु-चरणों में टिक जाता है)। अहंकार से गन्दा हुआ (जीव) कभी यह मैल धोता नहीं, (पर) प्रभु का नाम करोड़ों पाप नष्ट कर देता है। हे मन! (प्रभु का) ऐसा नाम प्रेमपूर्वक जप। हे नानक! (प्रभु का नाम) गुरमुखों की संगति में मिलता है।

जिह मारग के गने जाहि न कोसा।
हरि का नामु ऊहा संगि तोसा।
जिह पैडै महा अंध गुबारा।
हरि का नामु संगि उजीआरा।
जहा पंथि तेरा को न सिञानू।
हरि का नामु तह नालि पछानू।
जह महा भइआन तपति बहु घाम।
तह हरि के नामकी तुम ऊपरि छाम।
जहा त्रिखा मन तुझु आकरखै।
तह नानक हरि हरि अंम्रितु बरखै।

जिस (जिन्दगी-रूपी) राह के कोस आदि गिने नहीं जा सकते, वहाँ प्रभु का नाम (जीव के) साथ (राह की) राशि-पूँजी है। जिस मार्ग में (विकारों का) घोर अँधेरा है, (वहाँ) प्रभु का नाम (जीव के) साथ प्रकाश है। जिस मार्ग में तेरा कोई मित्र नहीं है, वहाँ प्रभु का नाम तेरे साथ (सच्चा) साथी है। जहाँ (जिन्दगी के मार्ग में) (विकारों की) बड़ी भयानक जलन तथा गर्मी है, वहाँ प्रभु का नाम (हे जीव!) तुझ पर छाया है। (हे जीव!) जहाँ (माया की) प्यास तुझे खींचती है, वहाँ हे नानक! प्रभु के नाम की वर्षा होती है (जो जलन को बुझा देती है)।

भगत जना की बरतनि नामु।
संत जना कै मनि बिस्रामु।
हरि का नामु दास की ओट।
हरि कै नामि उधरे जन कोटि।
हरि जसु करत संत दिनु राति।
हरि हरि अउखधु साध कमाति।
हरि जन कै हरि नामु निधान।
पारब्रहमि जन कीनो दान।
मन तन रंगि रते रंग एकै।
नानक जन कै बिरति बिबेकै।

प्रभु-नाम भक्तों के लिए व्यावहारिक सामग्री है अर्थात् उसकी हरवक्त आवश्यकता होती है, भक्तों के ही मन में यह टिका रहता है। प्रभु का नाम भक्तों का आसरा है, प्रभु-नाम के द्वारा करोड़ों व्यक्ति (विकारों से) बच जाते हैं। भक्तजन दिन-रात्रि प्रभु की प्रशंसा करते हैं, प्रभु-नाम-रूपी औषधि एकत्रित करते हैं। भक्तों के पास प्रभु का नाम ही भण्डार है, प्रभु के नाम की देन, अपने सेवकों पर आपही की है। भक्तजन मन-तन से एक प्रभु के प्रेम में रँगे रहते हैं; हे नानक! भक्तों के भीतर भले-बुरे की परख करनेवाला स्वभाव बन जाता है।

हरि का नामु जन कउ मुकति जुगति।
हरि कै नामि जन कउ त्रिपति भुगति।
हरि का नामु जन का रूप रंगु।
हरि का नामु जपत कब परै न भंगु।
हरि का नामु जन की वडिआई।
हरि कै नामि जन सोभा पाई।
हरि का नामु जन कउ भोग जोग।
हरि नामु जपत कछु नाहि बिओगु।
जनु राता हरि नाम की सेवा।
नानक पूजै हरि हरि देवा

भक्त के लिए प्रभु का नाम (ही) छुटकारे का साधन है, (क्योंकि) प्रभु के नाम के द्वारा (माया के) भोगों से जीव तृप्त हो जाता है, प्रभु का नाम भक्त का सौंदर्य है, प्रभु का नाम जपते हुए (भक्त के मार्ग में) कभी (कोई) अटकाव नहीं होता। प्रभु का नाम ही भक्त की प्रतिष्ठा है, (क्योंकि) प्रभु के नाम के द्वारा (ही) भक्तों ने (जगत् में) प्रसिद्धि। पाई है। (त्यागी का) योग (साधन) और गृहस्थी का माया-भोग भक्तजन के लिए प्रभु का नाम (ही) है, प्रभु का नाम जपते हुए (उसे) कोई दुःख-क्लेश नहीं होता। (प्रभु का) भक्त (सदा) प्रभु के नाम की सेवा (स्मरण) में मस्त रहता है; हे नानक! (भक्त सदा) प्रभुदेव को ही पूजता है।

हरि हरि जन कै मालु खजीना।
हरि धनु जन कउ आपि प्रभि दीना।
हरि हरि जन कै ओट सताणी।
हरि प्रतापि जन अवर न जाणी।
ओति पोति जन हरि रसि राते।
सुंन समाधि नाम रस माते।
आठ पहर जनु हरि हरि जपै।
हरि का भगतु प्रगट नही छपै।
हरि की भगति मुकति बहु करे।
नानक जन संगि केते तरे।

प्रभु का नाम भक्त के लिए धन है, यह नाम-रूपी धन प्रभु ने आप अपने भक्त को दिया है। भक्त के लिए प्रभु का (ही) पक्का आसरा है, भक्तों ने प्रभु के प्रताप से किसी दूसरे आसरे को नहीं देखा। भक्तजन प्रभु-नाम के रस में पूर्ण तौर पर भीगे रहते हैं, (और) नाम-रस में मस्त हुए (मन का वह) टिकाव (पाते हैं) जहाँ कोई कल्पना नहीं होती। (प्रभु का) भक्त आठों प्रहर प्रभु को जपता है, (जगत् में) भक्त प्रकट (हो जाता है), छिपा नहीं रहता। प्रभु की भक्ति अनन्त जीवों को (विकारों से) मुक्ति दिलाती है; हे नानक! भक्त की संगति में कई दूसरे भी पार हो जाते हैं।

पारजातु इहु हरि को नाम।
कामधेन हरि हरि गुण गाम।
सभ ते ऊतम हरि की कथा।
नामु सुनत दरद दुख लथा।
नाम की महिमा संत रिद वसै।
संत प्रतापि दुरतु सभु नसै।
संत का संगु वडभागी पाइऐ।
संत की सेवा नामु धिआईऐ।
नाम तुलि कछु अवरु न होइ।
नानक गुरमुखि नामु पावै जनु कोई।

प्रभु का नाम (ही) 'पारिजात' वृक्ष है, उसका गुणगान (ही इच्छा-पूरक) कामधेनु है। प्रभु की गुणस्तुति की बातें सब बातों से भली हैं (क्योंकि) प्रभु का नाम सुनने से सारे दुःख-दर्द उतर जाते हैं। (प्रभु के) नाम की महत्ता संतों के हृदय में बसती है (और संतों के प्रताप से) सारा पाप दूर हो जाता है। सौभाग्यवश संतों की संगति मिलती है (और) संतों की सेवा (करने से) (प्रभु का) नाम-स्मरण किया जाता है। प्रभु के बराबर दूसरा कोई (पदार्थ) नहीं, हे नानक! गुरु के सम्मुख होकर कोई विरला मनुष्य नाम (की देन) प्राप्त करता है।

ੴ

सलोकु

बहु सासत्र बहु सिम्रिती
पेखे सरब ढढोलि।
पूजसि नाही हरि हरे
नानक नाम अमोल।

✣ श्लोक ✣

बहुत से शास्त्र और स्मृतियाँ, (हमने) सब खोजकर देखे हैं, (लेकिन) यह अकालपुरुष के नाम की बराबरी नहीं कर सकते। हे नानक! (प्रभु के) नाम का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

❖ असटपदी ❖

जाप ताप गिआन सभि धिआन।
खट सासत्र सिम्रिति वखिआन।
जोग अभिआस करम ध्रम किरिआ।
सगल तिआगि बन मधे फिरिआ।
अनिक प्रकार कीए बहु जतना।
पुंन दान होमे बहु रतना।
सरीरु कटाइ होमै करि राती।
वरत नेम करै बहु भाती।
नही तुलि राम नाम बीचार।
नानक गुरमुखि नामु जपीऐ इक बार।

✣ अष्टपदी ✣

(वेद-मन्त्रों के) जाप करे, (शूरवीर को धूनियों में) तपाए, कई प्रकार से ज्ञान (की बातें करे) और (देवताओं के) ध्यान में लीन रहे, छः शास्त्रों और स्मृतियों का उपदेश करे; योग के साधन करे, कर्मकांडी धर्म की क्रिया करे, (अथवा) सारे (काम) छोड़कर जंगलों में घूमता फिरे; अनेक किस्मों के बड़े यत्न करे, पुण्यदान करे, और बहुत मात्रा में हवन, घृत करे, अपनी देह को थोड़ी-थोड़ी करके कटाए और आग में जला देवे, कई प्रकार के व्रतों का पालन करे; (लेकिन ये तमाम) प्रभु के नाम की चिन्तन के बराबर नहीं है (चाहे) हे नानक! यह नाम एक बार (ही) गुरु के समक्ष होकर जपा जाए।

नउ खंड प्रिथमी फिरै चिरु जीवै।

महा उदासु तपीसरु थीवै।

अगनि माहि होमत परान।

कनिक अस्व हैवर भूमि दान।

निउली करम करै बहु आसन।

जैन मारग संजम अति साधन।

निमख निमख करि सरीरु कटावै।

तउ भी हउमै मैलु न जावै।

हरि के नाम समसरि कछु नाहि।

नानक गुरमुखि नामु जपत गति पाहि।

(यदि कोई मनुष्य) सम्पूर्ण पृथ्वी पर फिरे, लम्बी उम्र तक जीता रहे, तटस्थ होकर बड़ा तपस्वी बन जाए; आग में (अपनी) देह होम कर दे; सोना, घोड़े और भूमिदान कर दे; न्यौली कर्म (योगासन का एक रूप) और बहुत सारे योगासन करे, जैनियों के रास्ते पर चलकर बड़े कठिन साधन तथा तपस्या करे; शरीर को थोड़ा-थोड़ा करके कटा देवे तो भी अहंभावना की मैल दूर नहीं होती। (ऐसा) कोई (प्रयास) प्रभु के नाम के बराबर नहीं है। हे नानक! जो मनुष्य गुरु के सम्मुख होकर नाम जपते हैं, वे ऊँची आत्मिक अवस्था प्राप्त करते हैं।

मन कामना तीरथ देह छुटै।
गरबु गुमानु न मन ते हुटै।
सोच करै दिनसु अरु राति।
मन की मैलु न तन ते जाति।
इसु देही कउ बहु साधना करै।
मन ते कबहू न बिखिआ टरै।
जलि धोवै बहु देह अनीति।
सुध कहा होइ काची भीति।
मन हरि के नाम की महिमा ऊच।
नानक नामि उधरे पतित बहु मूच।

(कई प्राणियों के) मन की इच्छा (होती है कि) तीर्थों पर (जाकर) शारीरिक वस्त्र छोड़ा जाए, (पर इस प्रकार भी) अहंकार मन से दूर नहीं होता। (मनुष्य) दिन तथा रात (तीर्थों पर) स्नान करे, (फिर भी) मन की मैल शरीर धोने से नहीं जाती। (यदि) इस शरीर को (साधने की खातिर) कई यत्न भी करें, (तो भी) कभी मन से माया (का प्रभाव) नहीं टलता। इस नश्वर शरीर को कई बार प्राणी पानी से भी धोए (तो भी यह शरीर-रूपी) कच्ची दीवार कहाँ पवित्र हो सकती है? हे मन! प्रभु के नाम की महत्ता बहुत बड़ी है। हे नानक! नाम के प्रभाव से असंख्य कुकर्मी जीव (विकारों से) बच जाते हैं।

बहुतु सिआणप जम का भउ बिआपै।
अनिक जतन करि त्रिसन न ध्रापै।
भेख अनेक अगनि नही बुझै।
कोटि उपाव दरगह नही सिझै।
छूटसि नाही ऊभ पइआलि।
मोहि बिआपहि माइआ जालि।
अवर करतूति सगल जमु डानै।
गोविंद भजन बिनु तिलु नही मानै।
हरि का नामु जपत दुखु जाइ।
नानक बोलै सहजि सुभाइ।

(जीव की) बहुत चतुराई (के कारण) यम का भय (जीव को) आ दबाता है (क्योंकि चतुराई के) अनेक यत्न करने से (माया की) प्यास समाप्त नहीं होती। अनेकों वेष बदलने से (तृष्णा की) आग नहीं बुझती, (ऐसे) करोड़ों तरीके (प्रयोग करने से भी प्रभु के) दरबार में व्यक्ति बेबाक (मुक्त) नहीं होता। (इन यत्नों से) जीव चाहे आकाश पर चढ़ जाए, चाहे पाताल में छिप जाए, (पर वह) माया से बच नहीं सकता, (बल्कि) जीव माया के जाल में तथा मोह में फँसते हैं। (नाम के बिना) दूसरी सब करतूतों को यमराज दण्डित करता है, प्रभु के भजन के बिना तनिकमात्र भी विश्वास नहीं करता। हे नानक! (जो मनुष्य) आत्मिक स्थिरता में टिककर प्रेमपूर्वक (हरि-नाम) उच्चारित करता है, (उसका) दुःख प्रभु का नाम जपते हुए दूर हो जाता है।

चारि पदारथ जे को मांगै।
साध जना की सेवा लागै।
जे को आपुना दूखु मिटावै।
हरि हरि नामु रिदै सद गावै।
जे को अपुनी सोभा लोरै।
साधसंगि इह हउमै छोरै।
जे को जनम मरण ते डरै।
साध जना की सरनी परै।
जिसु जन कउ प्रभ दरस पिआसा।
नानक ता कै बलि बलि जासा।

यदि कोई मनुष्य (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) चार पदार्थों का जरूरतमन्द हो, (तो उसे चाहिये कि) गुरमुखों की सेवा में लगे। यदि कोई मनुष्य अपना दुःख मिटाना चाहे तो प्रभु का नाम सदा हृदय में स्मरण करे। यदि कोई मनुष्य अपनी शोभा चाहता हो तो सत्संग में (रहकर) इस अहंकार का त्याग करे। यदि कोई मनुष्य जन्म-मरण (के चक्र) से डरता हो, तो वह संतों के चरणों का स्पर्श करे। हे नानक! (कह कि) जिस मनुष्य को प्रभु के दर्शन की इच्छा है, मैं उस पर सदा बलिहारी जाऊँ।

सगल पुरख महि पुरखु प्रधानु।
साधसंगि जा का मिटै अभिमानु।
आपस कउ जो जाणै नीचा।
सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा।
जा का मनु होइ सगल की रीना।
हरि हरि नामु तिनि घटि घटि चीना।
मन अपुने ते बुरा मिटाना।
पेखै सगल स्रिसटि साजना।
सूख दूख जन सम द्रिसटेता।
नानक पाप पुंन नही लेपा।

सत्संगत में (रहकर) जिस मनुष्य का अहंकार मिट जाता है, (वह) मनुष्य समस्त मनुष्यों में बड़ा है। जो मनुष्य अपने आपको (सबसे) कुकर्मी सोचता है, उसे सबसे भला समझना चाहिए। जिस मनुष्य का मन सबके चरणों की धूलि होता है, उस मनुष्य ने हरेक शरीर में प्रभु की सत्ता पहचान ली है। जिसने अपने मन से बुराई मिटा दी है, वह सारी सृष्टि (के जीवों को अपना) मित्र देखता है। हे नानक! (ऐसे) मनुष्य सुख-दुःख को एक जैसा समझते हैं, (इसीलिए) पाप और पुण्य का उन पर असर नहीं होता, (अर्थात् वे सभी स्थितियों में एक समान रहते हैं)।

निरधन कउ धनु तेरो नाउ।
निथावे कउ नाउ तेरा थाउ।
निमाने कउ प्रभ तेरो मानु।
सगल घटा कउ देवहु दानु।
करन करावनहार सुआमी।
सगल घटा के अंतरजामी।
अपनी गति मिति जानहु आपे।
आपन संगि आपि प्रभ राते।
तुम्हरी उसतति तुम ते होइ।
नानक अवरु न जानसि कोइ।

(हे प्रभु!) कंगाल के लिए तेरा नाम ही धन है, निराश्रित को तेरा सहारा है। तुच्छ व्यक्ति के लिए तेरा (नाम), हे प्रभु! आदरमान है, तुम ही सारे जीवों को देन देते हो। हे स्वामी! हे अन्तर्यामी! तुम आप ही सब कुछ करते हो, और, आप ही कराते हो। हे प्रभु! तुम अपनी हालत और अपनी मर्यादा आप ही जानते हो; तुम अपने आप में आप ही महान् हो। हे नानक! (कह, कि, हे प्रभु!) तेरी प्रशंसा तुझ से ही (व्यक्त) हो सकती है, कोई दूसरा तेरी महानता नहीं जानता।

सरब धरम महि स्रेसट धरमु।
हरि को नामु जपि निरमल करमु।
सगल क्रिआ महि ऊतम किरिआ।
साधसंगि दुरमति मलु हिरिआ।
सगल उदम महि उदमु भला।
हरि का नामु जपहु जीअ सदा।
सगल बानी महि अंम्रित बानी।
हरि को जसु सुनि रसन बखानी।
सगल थान ते ओहु ऊतम थानु।
नानक जिह घटि वसै हरि नामु।

(हे मन!) प्रभु का नाम जप (और) पवित्र आचरण (बना), यह धर्म सर्वोपरि है। सत्संग में (रहकर) दुर्बुद्धि (रूपी) मैल दूर की जाए—यह काम अन्य दूसरी धार्मिक रस्मों से उत्तम है। हे मन! सदा प्रभु का नाम जप—यह यत्न तमाम यत्नों में श्रेष्ठ है। प्रभु का यश (कानों से) सुन (तथा) जीभ से बोल—(प्रभु के यश की यह) आत्मिक जीवन देनेवाली वाणी दूसरी वाणियों से सुन्दर है। हे नानक! जिस हृदय में प्रभु का नाम विद्यमान है, वह (हृदय-रूपी) स्थान दूसरे तमाम (तीर्थ) स्थानों से पवित्र है।

ੴ

सलोकु

निरगुनीआर इआनिया

सो प्रभु सदा समालि।

जिनि कीआ तिसु चीति रखु

नानक निबही नालि।

✣ श्लोक ✣

हे मूर्ख! हे गुण-हीन (मनुष्य)! उस मालिक को सदा याद कर। हे नानक! जिसने तुझे पैदा किया है, उसे चित्त में (पिरो) रख, वही साथ निभाएगा।

असटपदी

रमईआ के गुन चेति परानी।
कवन मूल ते कवन द्रिसटानी।
जिनि तूं साजि सवारि सीगारिआ।
गरभ अगनि महि जिनहि ऊबारिआ।
बार बिवसथा तुझहि पिआरै दूध।
भरि जोबन भोजन सुख सूध।
बिरधि भइआ ऊपरि साक सैन।
मुखि अपिआउ बैठ कउ दैन।
इहु निरगुनु गुनु कछू न बूझै।
बखसि लेहु तउ नानक सीझै।

❖ अष्टपदी ❖

हे जीव! सुन्दर राम के गुण स्मरण कर, (देख) कब से (तुझे) कितना (सुन्दर बनाकर उसने) दिखाया है। जिस प्रभु ने तुझे बना-सँवार कर सुन्दर किया है, जिसने तुझे पेट की आग में भी बचाया, जो बाल अवस्था में तुझे दूध पिलाता है, भरी जवानी में भोजन और सुखों की सूझ (देता है); (जब) तू बूढ़ा हो जाता है तो सेवा करने को सगे-संबंधी (तैयार कर देता है), जो तुझ बैठे हुए को सुन्दर भोजन देते हैं। (पर) हे नानक! (कह—हे प्रभु!) यह गुणहीन जीव कोई उपकार नहीं समझता, (यदि) तू आप कृपा करे तो (यह जन्म-मनोरथ में) सफल होवे।

जिह प्रसादि धर ऊपरि सुखि बसहि।
सुत भ्रात मीत बनिता संगि हसहि।
जिह प्रसादि पीवहि सीतल जला।
सुखदाई पवनु पावकु अमुला।
जिह प्रसादि भोगहि सभि रसा।
सगल समग्री संगि साथि बसा।
दीने हसत पाव करन नेत्र रसना।
तिसहि तिआगि अवर संगि रचना
ऐसे दोख मूड़ अंध बिआपे
नानक काढि लेहु प्रभ आपे

(हे जीव!) जिसकी कृपा से तू धरती पर सुख
से वसता है; पुत्र, भाई, स्त्री तथा मित्र से हँसता है;
जिसकी कृपा से तू ठण्डा पानी पीता है, सुखदायक
हवा तथा अमूल्य अग्नि (इस्तेमाल करता है); जिसकी
कृपा से सारे रस भोगता है, तू सारे पदार्थों के साथ
रहता है; (जिसने) तुझे हाथ, पैर, कान, आँख, जीभ
दिए हैं, (प्रभु) को भुलाकर (हे जीव!) तू दूसरों के
साथ लीन है। (यह) मूर्ख अन्धे जीव (भलाई
भुलानेवाले) अवगुण में फँसे हैं। हे नानक! (इन
जीवों के लिए प्रार्थना कर, और कह)—हे प्रभु!
(इन्हें) आप (इन अवगुणों से) निकाल ले।

आदि अंति जो राखनहारु।
तिस सिउ प्रीति न करै गवारु।
जा की सेवा नव निधि पावै।
ता सिउ मूड़ा मनु नही लावै।
जो ठाकुरु सद सदा हजूरे।
ता कउ अंधा जानत दूरे।
जा की टहल पावै दरगह मानु।
तिसहि बिसारै मुगधु अजानु।
सदा सदा इहु भूलनहारु।
नानक राखनहारु अपारु

मूर्ख मनुष्य उस प्रभु के साथ प्रेम नहीं करता, जो (इसके) जन्म से लेकर मृत्यु तक देखभाल करता है। मूर्ख जीव उस प्रभु के साथ चित्त नहीं जोड़ता, जिसकी सेवा करने से (इसे सृष्टि के) नौ खजाने मिल जाते हैं। अन्धा मनुष्य उस ठाकुर को (कहीं) दूर (बैठा) समझता है, जो हरवक्त इसके साथ-साथ है। मूर्ख तथा अज्ञानी मनुष्य उस प्रभु को भुला बैठता है, जिसकी सेवा करने से इसे दरबार में आदर मिलता है (पर कौन-कौन सा अवगुण याद कराएँ?) यह जीव सदा ही गलतियाँ करता रहता है; हे नानक! रक्षक प्रभु अनन्त है (वह उस जीव के अवगुणों को नहीं देखता)।

रतनु तिआगि कउडी संगि रचै।
साचु छोडि झूठ संगि मचै।
जो छडना सु असथिरु करि मानै।
जो होवनु सो दूरि परानै।
छोड़ि जाइ तिस का स्रमु करै।
संगि सहाई तिसु परहरै।
चंदन लेपु उतारै धोइ।
गरधब प्रीति भसम संगि होइ।
अंध कूप महि पतित बिकराल।
नानक काढि लेहु प्रभ दइआल।

(माया-ग्रस्त) जीव (नाम-) रत्न छोड़कर (माया-रूपी) कौड़ी के साथ प्रसन्न फिरता है। सच्चे (प्रभु) को छोड़कर नश्वर पदार्थों के साथ अभिमान करता है। जो (माया) छोड़ जानी है, उसे सदा अटल समझता है; जो अवश्य घटित होती है, उस (मौत) को कहीं दूर ख्याल करता है। उस (माया-धन) की खातिर (रोज) कष्ट करता है, जो छोड़ जानी है; जो (प्रभु) साथ-साथ रक्षक है उसे भुला बैठा है। गधे (अज्ञानी) का प्रेम, राख के साथ ही होता है, (वह) चन्दन का लेप धोकर उतार देता है। (जीव माया के) अँधेरे भयानक कुएँ में गिरे पड़े हैं; हे नानक! (प्रार्थना कर और कह) हे दयालु प्रभु! (इन्हें आप इस अन्धकूप से) निकाल ले।

करतूति पसू की मानस जाति।
लोक पचारा करै दिनु राति।
बाहरि भेख अंतरि मलु माइआ।
छपसि नाहि कछु करै छपाइआ।
बाहरि गिआन धिआन इसनान।
अंतरि बिआपै लोभु सुआनु।
अंतरि अगनि बाहरि तनु सुआह।
गलि पाथर कैसे तरै अथाह।
जा कै अंतरि बसै प्रभु आपि।
नानक ते जन सहजि समाति।

जाति मनुष्य की है, परन्तु काम पशुओं वाले हैं, (वैसे) दिन-रात लोगों के लिए दिखावा कर रहा है। बाहर (शरीर पर) धार्मिक वस्त्र हैं, पर मन में माया की मैल है, (बाहरी दिखावे) से छुपाने का यत्न करने से (मन की मैल) छुपती नहीं। बाहर तीर्थ-स्नान तथा ज्ञान की बातें करता है, समाधियाँ भी लगाता है लेकिन मन में लोभ (रूपी) कुत्ता दबाव डाल रहा है। मन में (तृष्णा की) अग्नि है, बाहर शरीर राख (से लिपटा हुआ है); (यदि) गले में (विकारों के) पत्थर (हों तो) अथाह (संसार-समुद्र को) जीव कैसे पार करे? जिस-जिस मनुष्य के हृदय में प्रभु आ बसता है, हे नानक! वही स्थिर अवस्था में टिके रहते हैं।

सुनि अंधा कैसे मारगु पावै।
करु गहि लेहु ओड़ि निबहावै।
कहा बुझारति बूझै डोरा।
निसि कहीऐ तउ समझै भोरा।
कहा बिसनपद गावै गुंग।
जतन करै तउ भी सुर भंग।
कह पिंगुल परबत पर भवन।
नही होत ऊहा उसु गवन।
करतार करुणामै दीनु बेनती करै।
नानक तुमरी किरपा तरै।

अन्धा मनुष्य (केवलमात्र) सुनकर कैसे रास्ता ढूँढ़ ले? (हे प्रभु! आप इसका) हाथ पकड़ लो (ताकि यह) आखिर तक (प्रेम का) निर्वाह कर सके। बहरा मनुष्य (केवल) कहने से क्या समझेगा? (यदि) कहें कि (यह) रात है तो वह समझ लेता है कि (यह) दिन (है), गूँगा किस प्रकार बिसनपद (गायक पद) गा सकता है? (यदि) यत्न (भी) करे, उसकी आवाज टूटी रहती है। हे नानक! (केवल प्रार्थना कर और कह) हे कर्त्तार! हे दया के सागर! (यह) तुच्छ दास प्रार्थना करता है, तेरी कृपा से (ही) पार हो सकता है।

संगि सहाई सु आवै न चीति।
जो बैराई ता सिउ प्रीति।
बलूआ के ग्रिह भीतरि बसै।
अनद केल माइआ रंगि रसै।
द्रिड़ु करि मानै मनहि प्रतीति।
कालु न आवै मूड़े चीति।
बैर बिरोध काम क्रोध मोह।
झूठ बिकार महा लोभ ध्रोह।
इआहू जुगति बिहाने कई जनम।
नानक राखि लेहु आपन करि करम।

जो प्रभु (मूर्ख जीव का) साथी है, उसे यह स्मरण नहीं करता, (पर) जो वैरी है, उससे प्यार कर रहा है। रेत के घर में बसता है, (फिर भी) माया की मस्ती में आनन्द अनुभव कर रहा है। (अपने आपको) अमर समझे बैठा है, मन में (यह) यकीन बना हुआ है; परन्तु मूर्ख के चित्त में (कभी) मौत (का ख्याल भी) नहीं आता। वैर, विरोध, काम, क्रोध, झूठ, मोह, कुकर्म, लालच और विश्वासघात—इसी मार्ग का अनुसरण करके कई जन्म बीत गए हैं। हे नानक! (इस जीव के लिए प्रभु से प्रार्थना कर और कह) अपनी कृपा करके (इसे) बचा ले।

तू ठाकुरु तुम पहि अरदासि।
जीउ पिंडु सभु तेरी रासि।
तुम मात पिता हम बारिक तेरे।
तुमरी क्रिपा महि सूख घनेरे।
कोई न जानै तुमरा अंतु।
ऊचे ते ऊचा भगवंत।
सगल समग्री तुमरै सूत्रि धारी।
तुम ते होइ सु आगिआकारी।
तुमरी गति मिति तुम ही जानी।
नानक दास सदा कुरबानी।

(हे प्रभु!) तुम मालिक हो (हम जीवों की) प्रार्थना तेरे सामने ही है, यह आत्मा तथा शरीर सब तेरी ही देन है। तुम हमारे माँ-बाप हो, हम तेरे बालक हैं, तेरी कृपा-दृष्टि में अनगिनत सुख हैं। कोई तेरा अन्त नहीं पा सकता, (क्योंकि) तुम सर्वोच्च भगवान हो। (जगत् के) सारे पदार्थ तेरे ही हुक्म में टिके हुए हैं; तेरी रची हुई सृष्टि तेरी आज्ञा में सक्रिय है। तुम कैसे हो, कितने महान् हो—यह तुम आप ही जानते हो। हे नानक! (कह, हे प्रभु!) तेरे सेवक (तुझ पर) सदा बलिहारी जाते हैं।

✣ सलोकु ✣

देनहारु प्रभ छोडि कै
लागहि आन सुआइ।
नानक कहू न सीझई
बिनु नावै पति जाइ।

❖ श्लोक ❖

(तमाम देन) देनेवाले प्रभु को छोड़कर (जीव) दूसरे स्वादों में लगते हैं; (पर) हे नानक! (ऐसा) कभी (कोई मनुष्य जीवन-यात्रा में) सफल नहीं होता (क्योंकि) प्रभु के नाम के बिना प्रतिष्ठा नहीं रहती।

❖ असटपदी ❖

दस बसतू ले पाछै पावै
एक बसतु कारनि बिखोटि गवावै।
एक भी न देइ दस भी हिरि लेइ।
तउ मूड़ा कहु कहा करेइ।
जिसु ठाकुर सिउ नाही चारा।
ता कउ कीजै सद नमसकारा।
जा कै मनि लागा प्रभु मीठा।
सरब सूख ताहू मनि वूठा।
जिसु जन अपना हुकमु मनाइआ।
सरब थोक नानक तिनि पाइआ।

❖ अष्टपदी ❖

(मनुष्य प्रभु से) दस चीजें लेकर सँभाल लेता है, (पर) एक चीज की खातिर अपना विश्वास गवाँ लेता है। (यदि प्रभु) एक चीज भी न देवे, और, दस (दी हुई) भी छीन ले, तो बताओ, यह मूर्ख क्या कर सकता है? जिस मालिक के आगे पेश नहीं चल सकती, उसके आगे सदा सिर झुकाना ही चाहिए, (क्योंकि) जिस मनुष्य के मन में प्रभु प्यारा लगता है, सारे सुख उसके हृदय में आ बसते हैं। हे नानक! जिस मनुष्य द्वारा प्रभु अपना हुक्म मनाता है, (दुनिया के) सारे पदार्थ (मानो) उसने प्राप्त कर लिए हैं।

अगनत साहु अपनी दे रासि।
खात पीत बरतै अनद उलासि।
अपुनी अमान कछु बहुरि साहु लेइ।
अगिआनी मनि रोसु करेइ।
अपनी परतीति आप ही खोवै।
बहुरि उस का बिस्वासु न होवै।
जिस की बसतु तिसु आगै राखै।
प्रभ की आगिआ मानै माथै।
उस ते चउगुन करै निहालु।
नानक साहिबु सदा दइआलु।

(प्रभु शाह) असंख्य (पदार्थों की) पूँजी (जीव बनजारे को) देता है, (जीव) खाता-पीता चाव तथा खुशी से (इन पदार्थों को) इस्तेमाल करता है। (यदि) शाह अपनी कोई अमानत (धरोहर) वापिस कर ले, तो (यह) अज्ञानी मन में क्रोध करता है; (इस प्रकार) अपना विश्वास आप ही गवाँ लेता है और दोबारा उसका विश्वास नहीं किया जाता। (यदि) जिस प्रभु की (दी हुई) चीज है, उसके समक्ष (आप ही सहर्ष) रख दे और प्रभु का हुक्म स्वीकार कर ले तो (प्रभु उसे) पहले की अपेक्षा चौगुना खुश करता है। हे नानक! मालिक सदा कृपा करने वाला है।

अनिक भाति माइआ के हेत।
सरपर होवत जानु अनेत।
बिरख की छाइआ सिउ रंगु लावै।
ओह बिनसै उहु मनि पछुतावै।
जो दीसै सो चालनहारु।
लपटि रहिओ तह अंध अंधारु।
बटाऊ सिउ जो लावै नेह।
ता कउ हाथि न आवै केह।
मन हरि के नाम की प्रीति सुखदाई।
करिकिरपा नानक आपि लए लाई।

माया के प्रेम अनेक किस्मों के हैं, (लेकिन यह सारे) अन्त में नष्ट हो जाने वाले समझो। (यदि कोई मनुष्य) वृक्ष की छाया के साथ प्रेम करे, (परिणाम यह होगा कि) वह छाया नष्ट हो जाती है, और, वह मनुष्य मन में पश्चाताप करता है। गोचर जगत् नश्वर है, इस (जगत्) से यह अन्धा मनुष्य अपनत्व बनाए बैठा है। जो (भी) मनुष्य (किसी) यात्री से संबंध जोड़ लेता है, (अन्त में) उसके साथ कुछ नहीं लगता। हे मन! प्रभु के नाम का प्रेम (ही) सुख देनेवाला है; (पर) हे नानक! (यह प्रेम उस मनुष्य को प्राप्त होता है, जिसे) प्रभु कृपा करके आप (अपनी ओर) लगाता है।

मिथिआ तनु धनु कुटंबु सबाइआ।
मिथिआ हउमै ममता माइआ।
मिथिया राज जोबन धन माल।
मिथिआ काम क्रोध बिकराल।
मिथिआ रथ हसती अस्व बसत्रा।
मिथिआ रंग संगि माइआ पेखि हसता।
मिथिआ ध्रोह मोह अभिमानु।
मिथिआ आपस ऊपरि करत गुमानु।
असथिरु भगति साध की सरन।
नानक जपि जपि जीवै हरि के चरन।

(जब यह) शरीर, धन तथा सारा परिवार नश्वर है, (तो) माया का स्वामित्व तथा अहंकार—इन पर अभिमान करना भी मिथ्या (है)। राज्य, यौवन तथा धन-माल सब नश्वर है, काम तथा भयानक क्रोध, यह भी व्यर्थ हैं। रथ, हाथी, घोड़े तथा कपड़े साथ-साथ रहनेवाले नहीं हैं, (इस सारी) माया को प्रेम-पूर्वक देखकर (जीव) हँसता है (पर यह सब) व्यर्थ है। विश्वासघात, मोह तथा अहंकार—(ये सब मन की) व्यर्थ (लहरें) हैं, अपने आप पर अभिमान करना भी झूठा (नशा) है। सदा स्थिर रहनेवाली (प्रभु की) भक्ति (ही है जो) गुरु की शरण लेकर (की जाए)। हे नानक! प्रभु के चरण (ही) सदा जप कर (मनुष्य) असली (जीवन) जीता है।

मिथिआ स्रवन परनिंदा सुनहि।
मिथिआ हसत परदरब कउ हिरहि।
मिथिआ नेत्र पेखत परत्रिअ रूपाद।
मिथिआ रसना भोजन अन स्वाद।
मिथिआ चरन परबिकार कउ धावहि।
मिथिआ मन परलोभ लुभावहि।
मिथिआ तन नही परउपकारा।
मिथिआ बासु लेत बिकारा।
बिनु बूझे मिथिआ सभ भए।
सफल देह नानक हरि हरि नाम लए।

(मनुष्य के) कान व्यर्थ हैं, (यदि वे) परनिन्दा सुनते हैं; हाथ व्यर्थ हैं (यदि ये) पराए धन को चुराते हैं; आँखें व्यर्थ हैं (यदि ये) पराई जवानी का रूप देखती हैं; जीभ व्यर्थ है (यदि यह) खाने-पीने तथा दूसरे स्वादों में लगी है; चरण व्यर्थ हैं (यदि ये) पराए नुकसान के लिए भाग-दौड़ कर रहे हैं। हे मन! तू भी व्यर्थ है (यदि तू) पराए धन का लोभ कर रहा है। (वे) शरीर व्यर्थ हैं जो परोपकार नहीं करते, (नाक) व्यर्थ है, जो विकारों की गन्ध सूँघ रही है। (अपने-अपने अस्तित्व का मनोरथ) समझे बिना ये सारे (अंग) व्यर्थ हैं। हे नानक! वह शरीर सफल है, जो प्रभु का नाम जपता है।

बिरथी साकत की आरजा।
साच बिना कह होवत सूचा।
बिरथा नाम बिना तनु अंध।
मुखि आवत ता कै दुरगंध।
बिनु सिमरन दिनु रैनि ब्रिथा बिहाइ।
मेघ बिना जिउ खेती जाइ।
गोबिंद भजन बिनु ब्रिथे सभ काम।
जिउ किरपन के निरारथ दाम।
धंनि-धंनि ते जन जिह घटि बसिओ हरि नाउ।
नानक ता कै बलिबलि जाउ।

(परमात्मा से) टूटे हुए आदमी की उम्र व्यर्थ जाती है (क्योंकि) सच्चे प्रभु (के नाम) के बिना वह कैसे सच्चा हो सकता है ? नाम के बिना अन्धे (शाक्त) का शरीर किसी काम का नहीं, (क्योंकि) उसके मुँह से बदबू आती है। जैसे वर्षा के बिना फसल बेकार जाती है, (वैसे) स्मरण के बिना (नास्तिक) के दिन-रात व्यर्थ जाते हैं। प्रभु के भजन के बिना सारे ही काम निरर्थक हैं (क्योंकि ये काम मनुष्य का कुछ भी नहीं सँवारते), जैसे कंजूस का धन उसके किसी काम नहीं आता। वे मनुष्य भाग्यशाली हैं, जिनके हृदय में प्रभु का नाम बसता है। हे नानक! (कह कि) मैं उन (गुरमुखों पर) बलिहारी जाता हूँ।

रहत अवर कछु अवर कमावत।
मनि नही प्रीति मुखहु गंढ लावत।
जाननहार प्रभू परबीन।
बाहरि भेख न काहू भीन।
अवर उपदेसै आपि न करै।
आवत जावत जनमै मरै।
जिस कै अंतरि बसै निरंकारु।
तिस की सीख तरै संसारु।
जो तुम भाने तिन प्रभु जाता।
नानक उन जन चरन पराता।

धर्म के बाह्य चिह्न दूसरे हैं तथा वास्तविक जिन्दगी कुछ और है; मन में तो प्रभु के साथ प्रेम नहीं, मुख द्वारा बातें करके घर पूरा करता है। परमन की जाननेवाला प्रभु बुद्धिमान है, (वह कभी) किसी के बाहरी वेश से प्रसन्न नहीं हुआ। (जो मनुष्य) दूसरों को शिक्षा देता है, पर आप नहीं कमाता, वह सदा जन्म-मरण के चक्र में पड़ा रहता है। जिस मनुष्य के हृदय में निरंकार बसता है, उसकी शिक्षा से जगत् (विकारों से) बचता है। (हे प्रभु!) जो तुझे प्यारे लगते हैं, उन्होंने तुझे पहचाना है। हे नानक! (कह)—मैं उन (भक्तों) के चरण छूता हूँ।

करउ बेनती पारब्रहमु सभु जानै।
अपना कीआ आपहि मानै।
आपहि आप आपि करत निबेरा।
किसै दूरि जनावत किसै बुझावत नेरा।
उपाव सिआनप सगल ते रहत।
सभु किछु जानै आतम की रहत।
जिसु भावै तिसु लए लड़ि लाइ।
थान थनंतरि रहिआ समाइ।
सो सेवकु जिसु किरपा करी।
निमख निमख जपि नानक हरी

(जो) प्रार्थना मैं करता हूँ, प्रभु सब जानता है, अपने पैदा किए जीव को वह आप ही मान देता है। (जीवों के कर्मों के अनुसार) प्रभु आप ही न्याय करता है, (अर्थात्) किसी को यह बुद्धि देता है कि प्रभु हमारे निकट है और किसी को बताता है कि प्रभु कहीं दूर है। सब प्रयासों, चतुराइयों से (प्रभु) परे है (क्योंकि वह जीव के) आत्मिक आचरण की हरेक बात समझता है। जो जीव को भला लगता है, उसे अपने साथ लगाता है, प्रभु सर्वत्र श्रेष्ठ है। वही मनुष्य (असली) सेवक बनता है, जिस पर प्रभु कृपा करता है। हे नानक! ऐसे प्रभु को प्रतिपल याद कर।

ੴ

सलोकु

काम क्रोध अरु लोभ मोह
बिनसि जाइ अहंमेव।
नानक प्रभ सरणागती
करि प्रसादु गुरदेव।

✣ श्लोक ✣

हे नानक! (प्रार्थना कर और कह)—हे गुरुदेव! हे प्रभु! मैं शरणागत हूँ, (मुझ पर) कृपा कर, (मेरा) काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार दूर हो जाए।

❖ असटपदी ❖

जिह प्रसादि छतीह अंम्रित खाहि।
तिसु ठाकुर कउ रखु मन माहि।
जिह प्रसादि सुगंधत तनि लावहि।
तिस कउ सिमरत परम गति पावहि।
जिह प्रसादि बसहि सुख मंदिर।
तिसहि धिआइ सदा मन अंदरि।
जिह प्रसादि ग्रिह संगि सुख बसना।
आठ पहर सिमरहु तिसु रसना।
जिह प्रसादि रंग रस भोग।
नानक सदा धिआईऐ धिआवन जोग।

❖ अष्टपदी ❖

(हे भाई!) जिसकी कृपा से तू कई किस्मों के स्वादिष्ट खाने खाता है, उसे मन में (स्मरण) रख, जिसकी कृपा से अपने शरीर पर तू सुगंधियाँ लगाता है, उसे याद करने से तू उच्च स्थान प्राप्त कर लेगा। जिसकी दया से तू महलों में बसता है, उसे सदा मन में स्मरण कर। जिसकी कृपा से तू घर में मौज से रह रहा है, उसे जीभ से आठों प्रहर स्मरण कर। हे नानक! जिस (प्रभु) की कृपा से कौतुक-तमाशे, स्वादिष्ट भोजन और पदार्थ (प्राप्त होते हैं) उस स्मरण योग्य (भगवान) को सदा ही स्मरण करना चाहिए।

जिह प्रसादि पाट पटंबर हढावहि।
तिसहि तिआगि कत अवर लुभावहि।
जिह प्रसादि सुखि सेज सोईजै।
मन आठ पहर ताका जसु गावीजै।
जिह प्रसादि तुझु सभु कोऊ मानै।
मुखि ताको जसु रसन बखानै।
जिह प्रसादि तेरो रहता धरमु।
मन सदा धिआइ केवल पारब्रह्मु।
प्रभ जी जपत दरगह मानु पावहि।
नानक पति सेती घरि जावहि।

(हे मन!) जिसकी कृपा से तू रेशमी कपड़े पहनता है, उसे भुलाकर और कहाँ लुब्ध हो रहा है? जिस कृपा से सुखपूर्वक सेज पर सोता है, हे मन! उस प्रभु का यश आठों प्रहर गाना चाहिए। जिसकी कृपा से हरेक मनुष्य तेरा आदर करता है, उसकी प्रशंसा मुँह, जिह्वा से सदा कर। जिसकी कृपा से तेरा धर्म (स्थिर) रहता है, हे मन! तू सदा उस परमेश्वर को स्मरण कर। हे नानक! परमात्मा का भजन करने से (उसके) दरबार में आदर पाएगा और (यहाँ से) सम्मान अपने घर (परलोक) जायेगा।

जिह प्रसादि आरोग कंचन देही।
लिव लावहु तिसु राम सनेही।
जिह प्रसादि तेरा ओला रहत।
मन सुखु पावहि हरि हरि जसु कहत।
जिस प्रसादि तेरे सगल छिद्र ढाके।
मन सरनी परु ठाकुर प्रभ ता कै।
जिह प्रसादि तुझु को न पहूचै।
मन सासि सासि सिमरहु प्रभ ऊचे।
जिह प्रसादि पाई दुर्लभ देह।
नानक ता की भगति करेह।

जिसकी कृपा से सोने जैसी तेरी सुन्दर देह है, उस प्यारे राम से लौ जोड़। जिसकी कृपा से तेरा परदा बना रहता है, हे मन! उस प्रभु के गुण गाते हुए सुख पाएगा। जिसकी कृपा से तेरे सारे दोष ढके रहते हैं, हे मन! उस प्रभु ठाकुर की शरण लो। जिसकी कृपा से कोई तेरी बराबरी नहीं कर सकता, हे मन! उस महान् प्रभु को प्रत्येक श्वास स्मरण कर। हे नानक! जिसकी कृपा से तुझे यह मनुष्य शरीर मिला है, जो बड़ी मुश्किल से मिलता है, उस प्रभु की भक्ति कर।

जिह प्रसादि आभूखन पहिरीजै।
मन तिसु सिमरत किउ आलसु कीजै।
जिह प्रसादि अस्व हसति असवारी।
मन तिसु प्रभ कउ कबहू न बिसारी।
जिह प्रसादि बाग मिलख धना।
राखु परोइ प्रभु अपुने मना।
जिनि तेरी मन बनत बनाई।
ऊठत बैठत सद तिसहि धिआई।
तिसहि धिआइ जो एक अलखै।
ईहा ऊहा नानक तेरी रखै।

जिसकी कृपा से गहने पहने जाते हैं, हे मन! उसे स्मरण करते हुए आलस्य क्यों किया जाए? जिसकी कृपा से घोड़ों तथा हाथियों की सवारी करता है, हे मन! उस प्रभु को कभी न भुलाना। जिसकी दया से बाग, जमीन और धन (तुझे प्राप्त हुए हैं) उस प्रभु को अपने मन में पिरोकर रख। हे मन! जिस प्रभु ने तुझे बनाया है, उठते-बैठते उसे स्मरण कर। हे नानक! उस प्रभु को सदा स्मरण कर, जो एक है, और अनन्त है। लोक तथा परलोक में (वही) तेरी लाज रखने वाला है।

जिह प्रसादि करहि पुंन बहु दान।
मन आठ पहर करि तिस का धिआन।
जिह प्रसादि तू आचार बिउहारी।
तिसु प्रभ कउ सासि सासि चितारी।
जिस प्रसादि तेरा सुंदर रूपु।
सो प्रभु सिमरहु सदा अनूपु।
जिह प्रसादि तेरी नीकी जाति।
सो प्रभु सिमरि सदा दिन राति।
जिह प्रसादि तेरी पति रहै।
गुर प्रसादि नानक जसु कहै।

जिसकी कृपा से तू बहुत दान-पुण्य करता है, हे मन! आठों प्रहर उसका स्मरण कर। जिसकी कृपा से तू रीति-रस्म करने योग्य हुआ है, उस प्रभु को प्रत्येक श्वास में याद रख। जिसकी दया से तेरी सुन्दर शक्ल है, उस सुन्दर मालिक को सदा स्मरण कर। जिस प्रभु की कृपा से तुझे (मनुष्य-) जाति मिली है, उसे सदा दिन-रात स्मरण कर। जिसकी कृपा से तेरी प्रतिष्ठा बनी हुई है, (उसका नाम-स्मरण कर)। गुरु के प्रभाव से (भाग्यशाली मनुष्य) उसकी गुणस्तुति करता है।

जिह प्रसादि सुनहि करन नाद।
जिह प्रसादि पेखहि बिसमाद।
जिह प्रसादि बोलहि अंम्रित रसना।
जिह प्रसादि सुखि सहजे बसना।
जिह प्रसादि हसत कर चलहि।
जिह प्रसादि संपूरन फलहि।
जिह प्रसादि परम गति पावहि।
जिह प्रसादि सुखि सहजि समावहि।
ऐसा प्रभु तिआगि अवर कत लागहु।
गुर प्रसादि नानक मनि जागहु।

जिसकी कृपा से तू कानों से आवाज सुनता है, जिसकी कृपा से कौतुकपूर्ण दृश्य देखता है; जिसके प्रभाव से जीभ से मीठे बोल बोलता है, जिसकी कृपा से स्वाभाविक ही सुखी बस रहा है, जिसकी दया से तेरे हाथ काम दे रहे हैं, जिसकी कृपा से तू हरेक काम-काज में सफल होता है; जिसकी कृपा से तुझे उच्च स्थान मिलता है और तू सुख तथा बेफिक्री में मस्त है; ऐसा प्रभु भुलाकर तू किस ओर लग रहा है? हे नानक! गुरु के प्रभाव से मन में सचेत रहो।

जिह प्रसादि तूं प्रगटु संसारि।
तिसु प्रभ कउ मूलि न मनहु बिसारि।
जिह प्रसादि तेरा परतापु।
रे मन मूड़ तू ता कउ जापु।
जिह प्रसादि तेरे कारज पूरे।
तिसहि जानु मन सदा हजूरे।
जिह प्रसादि तूं पावहि साचु।
रे मन मेरे तूं ता सिउ राचु।
जिह प्रसादि सभ की गति होइ।
नामक जापु जपै जपु सोइ।

जिसकी कृपा से तू जगत् में शोभा वाला है, उसे कभी भी मन से न भुला। जिसकी कृपा से तुझे प्रशंसा मिली हुई है, हे मूर्ख मन! तू उस प्रभु को जप! जिसकी कृपा से तेरे (सारे) काम सफल होते हैं, हे मन! तू उस (प्रभु) को सदा अपने साथ-साथ जान। जिसके प्रभाव से तुझे सत्य प्राप्त होता है, हे मेरे मन! तू उस (प्रभु) के साथ जुड़ा रह। जिस (परमात्मा) की दया से हरेक (जीव) की (उस तक) पहुँच हो जाती है, हे नानक! उस (हरि) का नाम ही जपना चाहिये।

आपि जपाए जपै सो नाउ।
आपि गावाए सु हरि गुन गाउ।
प्रभ किरपा ते होइ प्रगासु।
प्रभू दइआ ते कमल बिगासु।
प्रभ सुप्रसंन बसै मनि सोइ।
प्रभ दइआ ते मति ऊतम होइ।
सरब निधान प्रभ तेरी मइआ।
आपहु कछू न किनहू लइआ।
जितु जितु लावहू तितु लगहि हरि नाथ।
नानक इन कै कछू न हाथ।

वही मनुष्य प्रभु का नाम जपता है, जिससे वह प्रभु आप जपाता है; वही मनुष्य हरि के गुण गाता है, जिसे वह गाने के लिए प्रेरित करता है। प्रभु की कृपा से (मन में ज्ञान का) प्रकाश होता है; उसकी दया से हृदय-रूपी कमल-फूल खिलता है। वह प्रभु (उस मनुष्य के) मन में बसता है, जिसपर वह प्रसन्न होता है, प्रभु की कृपा से (मनुष्य की) बुद्धि भली होती है। हे प्रभु! तेरी कृपा-दृष्टि में सारे खजाने हैं, अपने प्रयास से किसी ने कुछ भी प्राप्त नहीं किया। हे हरि स्वामी! तुम जिधर जीवों को लगाते हो, वे उधर ही लगते हैं। हे नानक! जीवों के वश में कुछ नहीं।

ੴ

✣ सलोकु ✣

अगम अगाधि पारब्रहमु सोइ।
जो जो कहै सु मुकता होइ।
सुनि मीता नानकु बिनवंता।
साध जना की अचरज कथा।

१ਓ

❖ श्लोक ❖

वह अन्तहीन प्रभु (जीव की) पहुँच से परे है और अथाह है। जो-जो मनुष्य उसे स्मरण करता है, वह (-वह विकारों के जाल से) मुक्ति पा लेता है। हे मित्र! सुन, नानक प्रार्थना करता है—(स्मरण करनेवाले) गुरमुखों (के गुणों) का जिक्र हैरान करने वाला है।

❖ असटपदी ❖

साध कै संगि मुख ऊजल होत।
साधसंगि मलु सगली खोत।
साध कै संगि मिटै अभिमानु।
साध कै संगि प्रगटै सुगिआनु।
साध कै संगि बुझै प्रभु नेरा।
साधसंगि सभु होत निबेरा।
साध कै संगि पाए नाम रतनु।
साध कै संगि एक ऊपरि जतनु।
साध की महिमा बरनै कउनु प्रानी।
नानक साध की सोभा प्रभ माहि समानी।

❖ अष्टपदी ❖

गुरमुखों की संगति में रहने से मुख उजले होते हैं, (अर्थात् प्रतिष्ठा बन आती है) (क्योंकि) साधुजनों के पास रहने से (विकारों की) सारी मैल मिट जाती है। साधु पुरुषों की संगति में अहंकार दूर होता है और श्रेष्ठ ज्ञान प्रकट होता है। संतों की संगति में प्रभु साथ-साथ रहता हुआ लगता है, (इसलिए) वासना की सारी समाप्ति हो जाती है, (अर्थात् जीव कुमार्ग पर नहीं लगता)। गुरमुखों की संगति में मनुष्य नाम-रूपी रत्न प्राप्त कर लेता है, और, एक प्रभु को मिलने का यत्न करता है। साधु पुरुषों की प्रशंसा कौन मनुष्य व्यक्त कर सकता है? (क्योंकि) हे नानक! संतजनों की शोभा प्रभु की सेवा के बराबर हो जाती है।

साध कै संगि अगोचरु मिलै।
साध कै संगि सदा परफुलै।
साध कै संगि आवहि बसि पंचा।
साधसंगि अंम्रित रसु भुंचा।
साधसंगि होइ सभ की रेन।
साध कै संगि मनोहर बैन।
साध कै संगि न कतहूं धावै।
साधसंगि असथिति मनु पावै।
साध कै संगि माइआ ते भिंन।
साधसंगि नानक प्रभ सुप्रसंन।

गुरमुखों की संगति में (मनुष्य को) वह प्रभु मिल जाता है जो शारीरिक इन्द्रियों की पहुँच से परे है; और मनुष्य सदा प्रसन्न रहता है। संतों की संगति में रहने से कामादिक पाँचों विकार काबू में आ जाते हैं, (क्योंकि मनुष्य) नाम-रूपी अमृत का रस चख लेता है। सज्जनों की संगति करने से (मनुष्य) सबके चरणों की धूलि बन जाता है और (सब से) मीठे वचन बोलता है। सज्जनों में रहने से (मनुष्य का) मन किसी ओर नहीं दौड़ता, और (प्रभु के चरणों में) टिकाव प्राप्त कर लेता है। हे नानक! गुरमुखों की संगति में टिकने से (मनुष्य) माया के प्रभाव से अप्रभावित रहता है और अकालपुरुष इस पर दयालु होता है।

साधसंगि दुसमन सभि मीत।
साधू कै संगि महा पुनीत।
साधसंगि किस सिउ नही बैरु।
साध कै संगि न बीगा पैरु।
साध कै संगि नाही को मंदा।
साधसंगि जाने परमानंदा।
साध कै संगि नाही हउ तापु।
साध कै संगि तजै सभु आपु।
आपे जानै साध बड़ाई।
नानक साध प्रभू बनि आई।

गुरमुखों की संगति में रहने से सारे वैरी (भी) मित्र (दिखने लगते हैं), (क्योंकि) संतजनों की संगति में बैठने से किसी के साथ वैर नहीं रह जाता और किसी कुमार्ग की ओर चरण नहीं उठते। भलों की संगति में कोई मनुष्य बुरा दिखाई नहीं देता, (क्योंकि मनुष्य सर्वत्र) उच्च सुख के स्वामी प्रभु को ही जानता है। गुरमुख की संगति करने से अहंकार-रूपी ताप नहीं रह जाता, (क्योंकि) सत्संगति में मनुष्य तमाम आपाभाव छोड़ देता है। सज्जन की महानता प्रभु आप ही जानता है, (क्योंकि) हे नानक! साधु और प्रभु का प्रेम परिपक्व हो जाता है।

गुरमुखों की संगति में रहने से मनुष्य का मन कभी नहीं भटकता, (क्योंकि) सज्जनों की संगति में (प्रभु का) नाम-रूपी अगोचर वस्तु मिल जाती है, (और मनुष्य) कभी शिथिल न होनेवाली शक्ति प्राप्त कर लेता है। गुरमुखों की संगति में रहकर मनुष्य उच्च ठिकाने पर रहता है और अकालपुरुष के चरणों में जुड़ा रहता है। संतों की संगति में रहकर (मनुष्य) सारे धर्मों को अच्छी तरह समझ लेता है और केवल अकालपुरुष को (सर्वत्र देखता है)। संतों की संगति में (मनुष्य) नाम-भण्डार प्राप्त कर लेता है, (इसलिए) हे नानक! (कह—) मैं सज्जनों पर बलिहारी हूँ।

गुरमुखों की संगति में रहने से मनुष्य का मन कभी नहीं भटकता, (क्योंकि) सज्जनों की संगति में (प्रभु का) नाम-रूपी अगोचर वस्तु मिल जाती है, (और मनुष्य) कभी शिथिल न होनेवाली शक्ति प्राप्त कर लेता है। गुरमुखों की संगति में रहकर मनुष्य उच्च ठिकाने पर रहता है और अकालपुरुष के चरणों में जुड़ा रहता है। संतों की संगति में रहकर (मनुष्य) सारे धर्मों को अच्छी तरह समझ लेता है और केवल अकालपुरुष को (सर्वत्र देखता है)। संतों की संगति में (मनुष्य) नाम-भण्डार प्राप्त कर लेता है, (इसलिए) हे नानक! (कह—) मैं सज्जनों पर बलिहारी हूँ।

साध कै संगि सभ कुल उधारै।
साधसंगि साजन मीत कुटंब निसतारै।
साधू कै संगि सो धनु पावै।
जिसु धन ते सभु को वरसावै।
साधसंगि धरम राइ करे सेवा।
साध कै संगि सोभा सुरदेवा।
साधू कै संगि पाप पलाइन।
साधसंगि अंम्रित गुन गाइन।
साध कै संगि स्रब थान गंमि।
नानक साध कै संगि सफल जनंम।

गुरमुखों की संगति में रहकर (मनुष्य अपनी) सारी वंशावलि (विकारों से) बचा लेता है और सज्जनों, मित्रों तथा परिवार को पार कर लेता है। संतों की संगति में मनुष्य को वह धन प्राप्त हो जाता है, जिस धन के मिलने से हरेक मनुष्य प्रसिद्धि वाला हो जाता है। सज्जनों की संगति में रहने से धर्मराज (भी) सेवा करता है और देवता (भी) शोभित करते हैं। गुरमुखों की संगति में पाप दूर हो जाते हैं, (क्योंकि उनकी संगति में) प्रभु के अमर करने वाले गुण (मनुष्य) गाते हैं। संतों की संगति में रहकर सब ओर पहुँच हो जाती है; हे नानक! साधुओं की संगति में मनुष्य-जन्म का फल मिल जाता है।

साध कै संगि नही कछु घाल।
दरसनु भेटत होत निहाल।
साध कै संगि कलूखत हरै।
साध कै संगि नरक परहरै।
साध कै संगि ईहा ऊहा सुहेला।
साधसंगि बिछुरत हरि मेला।
जो इछै सोई फलु पावै।
साध कै संगि न बिरथा जावै।
पारब्रहमु साध रिद बसै।
नानक उधरै साध सुनि रसै।

साधुओं की संगति में रहने से तप आदि करने की आवश्यकता नहीं रहती, (क्योंकि उन) का दर्शनमात्र करके हृदय प्रसन्न हो जाता है। गुरमुखों की संगति में (मनुष्य) अपने पाप नष्ट कर लेता है (और इस प्रकार) नरकों से बच जाता है। संतों की संगति में रहकर (मनुष्य) लोक तथा परलोक में सुखी हो जाता है और प्रभु से बिछुड़ा हुआ (दोबारा) उसे मिल पड़ता है। गुरमुखों की संगति में (मनुष्य) इच्छा से प्यासा नहीं जाता, (बल्कि) जो इच्छा करता है, वही फल पाता है। अकालपुरुष संतजनों के हृदय में बसता है; हे नानक! (मनुष्य) संतजनों की जीभ से (उपदेश) सुनकर (विकारों से) बच जाता है।

साध कै संगि सुनउ हरि नाउ।
साधसंगि हरि के गुन गाउ।
साध कै संगि न मन ते बिसरै।
साधसंगि सरपर निसतरै।
साध कै संगि लगै प्रभु मीठा।
साधू कै संगि घटि घटि डीठा।
साधसंगि भए आगिआकारी।
साधसंगि गति भई हमारी।
साध कै संगि मिटे सभि रोग।
नानक साध भेटे संजोग।

मैं गुरमुखों की संगति में रहकर प्रभु का नाम सुनूँ और प्रभु के गुण गाऊँ। संतों की संगति में रहने से प्रभु मन से विस्मृत नहीं होता, संतों की संगति में मनुष्य अवश्य (विकारों से) बच निकलता है। सज्जनों की संगति में रहने से प्रभु प्यारा लगने लगता है और वह हरेक शरीर में दिखाई देने लगता है। सत्संगति करने से (हम) प्रभु का हुक्म माननेवाले हो जाते हैं और हमारी आत्मिक अवस्था सुधर जाती है। संतों की संगति में सारे रोग मिट जाते हैं; हे नानक! (बड़े) भाग्यों से संतजन मिलते हैं।

साध की महिमा बेद न जानहि।
जेता सुनहि तेता बखिआनहि।
साध की उपमा तिहु गुण ते दूरि।
साध की उपमा रही भरपूरि।
साध की सोभा का नाहीं अंत।
साध की सोभा सदा बेअंत।
साध की सोभा ऊच ते ऊची।
साध की सोभा मूच ते मूची।
साध की सोभा साध बनि आई।
नानक साध प्रभ भेदु न भाई।

संत की महानता वेद (भी) नहीं जानते, वे तो जितना सुनते हैं, उतना ही व्यक्त करते हैं, (पर संत की महिमा कथन से परे है)। संत की समानता तीनों गुणों से परे है। साधु की समानता उस प्रभु से हो सकती है जो सर्वत्र व्यापक है। साधु की शोभा का अन्दाजा नहीं लग सकता, सदा (इसे) अभेद ही (कहा जा सकता है)। साधु की शोभा सब की शोभा से ऊँची है और महान् है। साधु की शोभा साधु को ही उपयुक्त लगती है, (क्योंकि) हे नानक! (कह—) साधु तथा प्रभु में कोई भेद नहीं है।

ੴ

सलोकु

मनि साचा मुखि साचा सोइ।
अवरु न पेखै एकसु बिनु कोई।
नानक इह लछण ब्रहम गिआनी होइ।

✣ श्लोक ✣

(जिस मनुष्य के) मन में सदा सत्यस्वरूप प्रभु (जो) मुँह से उसी प्रभु को (जपता है), (जो मनुष्य) क अकालपुरुष के अतिरिक्त (कहीं भी) किसी सरे को नहीं देखता, हे नानक! (वह मनुष्य) इन णों के कारण ब्रह्मज्ञानी हो जाता है।

✣ असटपदी ✣

ब्रहम गिआनी सदा निरलेप।
जैसे जल महि कमल अलेप।
ब्रहम गिआनी सदा निरदोख।
जैसे सूरु सरब कउ सोख।
ब्रहम गिआनी कै द्रिसटि समानि।
जैसे राज रंक कउ लागै तुलि पवान।
ब्रहम गिआनी कै धीरजु एक।
जिउ बसुधा कोऊ खोदै कोऊ चंदन लेप।
ब्रहम गिआनी का इहै गुनाउ।
नानक जिउ पावक का सहज सुभाउ।

✤ अष्टपदी ✤

ब्रह्मज्ञानी (मनुष्य विकारों से) सदा निर्लिप्त (रहते हैं) जैसे पानी में (उगे हुए) कमल-पुष्प (कीचड़ से) स्वच्छ होते हैं। जैसे सूरज सारे (रसों) को सुखा देता है, (वैसे) ब्रह्मज्ञानी (मनुष्य) सारे पापों से बचे रहते हैं। जैसे हवा राजा और कंगाल दोनों को एक सी लगती है, (वैसे) ब्रह्मज्ञानी के भीतर (सब की ओर) एक सी दृष्टि (से देखने का स्वभाव होता) है। (कोई कुछ भी कहे, पर) ब्रह्मज्ञानी मनुष्यों के भीतर निरन्तर हौसला रहता है, जैसे कोई तो धरती को खोदता है और कोई चन्दन का लेप करता है, (परन्तु धरती को कोई परवाह नहीं)। हे नानक! जैसे आग का सहज स्वभाव है, (हरेक वस्तु का मैल जला देना) (वैसे) ब्रह्मज्ञानी मनुष्य का (भी) यही गुण है।

ब्रहम गिआनी निरमल ते निरमला।
जैसे मैलु न लागै जला।
ब्रहम गिआनी कै मनि होइ प्रगासु।
जैसे धर ऊपरि आकासु।
ब्रहम गिआनी कै मित्र सत्रु समानि।
ब्रहम गिआनी कै नाही अभिमान।
ब्रहम गिआनी ऊच ते ऊचा।
मनि अपनै है सभ ते नीचा।
ब्रहम गिआनी से जन भए।
नानक जिन प्रभु आपि करेइ।

जैसे पानी को कभी मैल नहीं लगती (दोबारा स्वच्छ हो जाता है, वैसे ही) ब्रह्मज्ञानी मनुष्य (विकारों की मैल से बचकर) सदा निर्मल है। जैसे धरती पर आकाश (सर्वत्र व्यापक है, वैसे) ब्रह्मज्ञानी के मन में (यह) प्रकाश हो जाता है कि (प्रभु सर्वत्र मौजूद है), ब्रह्मज्ञानी को सज्जन तथा बैरी एक जैसा लगता है, (क्योंकि) उसके भीतर अहंकार नहीं है। ब्रह्मज्ञानी (आत्मिक अवस्था में) सर्वोच्च है, (पर) अपने मन में (अपने आपको) सबसे छोटा (जानता है)। हे नानक! वही मनुष्य ब्रह्मज्ञानी बनते हैं, जिन्हें प्रभु आप बनाता है।

ब्रहम गिआनी सगल की रीना।
आतम रसु ब्रहम गिआनी चीना।
ब्रहम गिआनी की सभ ऊपरि मइआ।
ब्रहम गिआनी ते कछु बुरा न भइआ।
ब्रहम गिआनी सदा समदरसी।
ब्रहम गिआनी की द्रिसटि अंम्रितु बरसी।
ब्रहम गिआनी बंधन ते मुकता।
ब्रहम गिआनी की निरमल जुगता।
ब्रहम गिआनी का भोजनु गिआन।
नानक ब्रहम गिआनी का ब्रहम धिआनु।

ब्रह्मज्ञानी सारे (व्यक्तियों) के पैरों की धूलि (होकर रहता है); उसने आत्मिक आनन्द को पहचान लिया है। ब्रह्मज्ञानी सब पर प्रसन्न होता है और कोई कुकर्म नहीं करता। ब्रह्मज्ञानी सदा सबकी ओर समान दृष्टि से देखता है, उसकी दृष्टि से (सब पर) अमृत की वर्षा होती है। ब्रह्मज्ञानी (माया के) बन्धनों से स्वतन्त्र होता है और उसकी जीवन-युक्ति विकारों से रहित है। (ईश्वरीय-) ज्ञान ब्रह्मज्ञानी की खुराक है, हे नानक! ब्रह्मज्ञानी की सुरति अकालपुरुष से जुड़ी रहती है।

ब्रहम गिआनी एक ऊपरि आस।
ब्रहम गिआनी का नहीं बिनास।
ब्रहम गिआनी कै गरीबी समाहा।
ब्रहम गिआनी परउपकार उमाहा।
ब्रहम गिआनी कै नाही धंधा।
ब्रहम गिआनी ले धावतु बंधा।
ब्रहम गिआनी कै होइ सु भला।
ब्रहम गिआनी सुफल फला।
ब्रहम गिआनी संगि सगल उधारु।
नानक ब्रहम गिआनी जपै सगल संसारु।

ब्रह्मज्ञानी एक अकालपुरुष पर आस रखता है; ब्रह्मज्ञानी (की उच्च आत्मिक अवस्था) का कभी नाश नहीं होता है। ब्रह्मज्ञानी के हृदय में गरीबी (का भाव) टिका रहता है और उसे दूसरों की भलाई करने का (सदा) चाव (चढ़ा रहता है)। ब्रह्मज्ञानी के मन में (माया का) जंजाल नहीं होता, (क्योंकि) वह भटकते मन को काबू करके (माया से) रोक सकता है। जो कुछ (प्रभु की ओर से) होता है, ब्रह्मज्ञानी को अपने मन में भला प्रतीत होता है, (इस प्रकार) उसका मनुष्य-जन्म भली प्रकार सफल होता है। ब्रह्मज्ञानी की संगति में सबका बेड़ा पार होता है (क्योंकि) हे नानक! ब्रह्मज्ञानी के द्वारा सारा जगत् (ही) (प्रभु का नाम) जपने लगता है।

ब्रहम गिआनी कै एकै रंग।
ब्रहम गिआनी कै बसै प्रभु संग।
ब्रहम गिआनी कै नामु आधारु।
ब्रहम गिआनी कै नामु परवारु।
ब्रहम गिआनी सदा सद जागत।
ब्रहम गिआनी अहंबुधि तिआगत।
ब्रहम गिआनी कै मनि परमानंद।
ब्रहम गिआनी कै घरि सदा अनंद।
ब्रहम गिआनी सुख सहज निवास।
नानक ब्रहम गिआनी का नही बिनास।

ब्रह्मज्ञानी के हृदय में सदा एक अकालपुरुष का प्यार (रहता) है, (इसलिए) प्रभु ब्रह्मज्ञानी के साथ-साथ रहता है। ब्रह्मज्ञानी के मन में प्रभु (के नाम) की टेक है और नाम ही उसका परिवार है। ब्रह्मज्ञानी सदा सचेत रहता है और 'मैं, मैं' करने वाली बुद्धि छोड़ देता है। ब्रह्मज्ञानी के मन में उच्च सुख का स्वामी अकालपुरुष बसता है, (इसलिए) उसके हृदय-रूपी घर में सदा प्रसन्नता है। ब्रह्मज्ञानी (मनुष्य) सुख तथा शान्ति में टिका रहता है; (और) हे नानक! ब्रह्मज्ञानी का कभी नाश नहीं होता।

ब्रहम गिआनी ब्रहम का बेता।
ब्रहम गिआनी एक संगि हेता।
ब्रहम गिआनी कै होइ अचिंत।
ब्रहम गिआनी का निरमल मंत।
ब्रहम गिआनी जिसु करै प्रभु आपि।
ब्रहम गिआनी का बड परताप।
ब्रहम गिआनी का दरसु बडभागी पाईऐ।
ब्रहम गिआनी कउ बलि बलि जाईऐ।
ब्रहम गिआनी कउ खोजहि महेसुर।
नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर।

ब्रह्मज्ञानी (मनुष्य) अकालपुरुष का ज्ञाता बन जाता है और वह एक प्रभु से ही प्रेम करता है। ब्रह्मज्ञानी के मन में (सदा) बेफिक्री रहती है, उसका उपदेश पवित्र करनेवाला होता है। ब्रह्मज्ञानी की बड़ी प्रसिद्धि हो जाती है, (पर वही मनुष्य ब्रह्मज्ञानी बनता है), जिसे प्रभु आप बनाता है। ब्रह्मज्ञानी का दर्शन बड़े भाग्यों से होता है; उस पर सदा बलिहारी जाएँ; शिव (आदि देवगण भी) ब्रह्मज्ञानी को खोजते फिरते हैं; हे नानक! अकालपुरुष आप ब्रह्मज्ञानी (का रूप) है।

ब्रहम गिआनी की कीमति नाहि।
ब्रहम गिआनी कै सगल मन माहि।
ब्रहम गिआनी का कउन जानै भेदु।
ब्रहम गिआनी कउ सदा अदेसु।
ब्रहम गिआनी का कथिआ न जाइ अधाख्यरु।
ब्रहम गिआनी सरब का ठाकुरु।
ब्रहम गिआनी की मिति कउनु बखानै।
ब्रहम गिआनी की गति ब्रहम गिआनी जानै।
ब्रहम गिआनी का अंतु न पारु।
नानक ब्रहम गिआनी कउ सदा नमसकारु।

ब्रह्मज्ञानी के गुणों का मूल्यांकन नहीं हो सकता, सारे ही (गुण) ब्रह्मज्ञानी के भीतर हैं। कौन सा मनुष्य ब्रह्मज्ञानी (की ऊँची जिन्दगी) का भेद पा सकता है! ब्रह्मज्ञानी के समक्ष झुकना ही (शोभा देता) है। ब्रह्मज्ञानी (की महिमा) का आधा अक्षर भी बखान नहीं किया जा सकता; वह सारे जीवों का पूज्य है। ब्रह्मज्ञानी (की ऊँची जिन्दगी) का अनुमान कौन लगा सकता है; उसकी हालत (उस जैसा) ब्रह्मज्ञानी ही जानता है। ब्रह्मज्ञानी (के गुणों के समुद्र) का कोई ओर-छोर नहीं; हे नानक! सदा ब्रह्मज्ञानी के चरणों पर पड़ा रह।

ब्रहम गिआनी सभ स्रिसटि का करता।
ब्रहम गिआनी सद जीवै नही मरता।
ब्रहम गिआनी मुकति जुगति जीअ का दाता।
ब्रहम गिआनी पूरन पुरखु बिधाता।
ब्रहम गिआनी अनाथ का नाथु।
ब्रहम गिआनी का सभ ऊपरि हाथु।
ब्रहम गिआनी का सगल अकारु।
ब्रहम गिआनी आपि निरंकारु।
ब्रहम गिआनी की सोभा ब्रहमगिआनी बनी।
नानक ब्रहम गिआनी सरब का धनी।

ब्रह्मज्ञानी सारे जगत् का बनानेवाला है, सदा ही जीता है, कभी (जन्म) मरण के चक्र में नहीं आता। ब्रह्मज्ञानी मुक्ति का मार्ग (बताने वाला तथा उच्च आत्मिक) जिन्दगी का देने वाला है, वही पूर्णपुरुष तथा मालिक है। ब्रह्मज्ञानी निराश्रितों का आश्रय (स्वामी) है, सब की सहायता करता है। गोचर जगत् ब्रह्मज्ञानी का (अपना) है, वह तो प्रत्यक्ष ही परमात्मा है। ब्रह्मज्ञानी की महिमा (कोई) ब्रह्मज्ञानी ही कह सकता है; हे नानक! ब्रह्मज्ञानी सब जीवों का मालिक है।

ੴ

सलोकु

उरि धारै जो अंतरि नामु
सरब मै पेखै भगवानु।
निमख निमख ठाकुर नमसकारै
नानक ओहु अपरसु सगल निसतारै।

❖ श्लोक ❖

जो मनुष्य सदा अपने हृदय में अकालपुरुष का नाम टिकाए रखता है और भगवान को सब में व्यापक देखता है, जो पल-पल अपने प्रभु को पुकारता है; हे नानक! वह (सच्चा) अस्पर्श (निर्लिप्त) है और वह सब जीवों को (संसार-समुद्र से) तार लेता है।

असटपदी

मिथिआ नाही रसना परस।
मन महि प्रीति निरंजन दरस।
पर त्रिअ रूपु न पेखै नेत्र।
साध की टहल संतसंगि हेत।
करन न सुनै काहू की निंदा।
सभ ते जानै आपस कउ मंदा।
गुर प्रसादि बिखिआ परहरै।
मन की बासना मन ते टरै।
इंद्री जित पंच दोख ते रहत।
नानक कोटि मधे को ऐसा अपरस।

✣ अष्टपदी ✣

जो मनुष्य जीभ से मिथ्या नहीं बोलता, मन में अकालपुरुष के दर्शनों की इच्छा रखता है; जो पराई स्त्री के सौंदर्य को अपनी आँखों से नहीं देखता, (कुदृष्टि से नहीं देखता), भले मनुष्यों की सेवा करता है और संतजनों की संगति में प्रीति (रखता) है; जो कानों से किसी की निंदा नहीं सुनता, (बल्कि) अपने को सबसे छोटा समझता है; जो गुरु की कृपा के प्रभाव से माया (का प्रभाव) परे हटा देता है और जिसके मन की वासना मन से टल जाती है। जो अपनी ज्ञानेन्द्रियों को वश में रखकर कामादिक पाँचों विकारों से बचा रहता है, हे नानक! करोड़ों में कोई ऐसा विरला व्यक्ति 'अपरस' (पवित्र) कहा जा सकता

बैसनो सो जिसु ऊपरि सुप्रसंन।
बिसन की माइआ ते होइ भिंन।
करम करत होवै निहकरम।
तिसु बैसनो का निरमल धरम।
काहू फल की इछा नही बाछै।
केवल भगति कीरतन संगि राचै।
मन तन अंतरि सिमरन गोपाल।
सभ ऊपरि होवत किरपाल।
आपि द्रिड़ै अवरह नामु जपावै।
नानक ओहु बैसनो परम गति पावै।

जो मनुष्य प्रभु की माया से अप्रभावित तथा निष्कलंक है, और, जिस पर प्रभु आप प्रसन्न होता है, उसे वास्तविक वैष्णव समझो। उस वैष्णव का धर्म भी पवित्र है, जो कर्म करता हुआ फल की इच्छा नहीं रखता। जो मनुष्य केवल भक्ति तथा कीर्तन में मस्त रहता है और किसी भी फल की अभिलाषा नहीं रखता; जिसके मन-तन में प्रभु का स्मरण बस रहा है, जो सब जीवों पर दया करता है। जो आप (प्रभु के नाम को) अपने मन में टिकाता है तथा दूसरों को (भी) नाम-स्मरण कराता है, हे नानक! वह वैष्णव का उच्च स्थान प्राप्त करता है।

भगउती भगवंत भगति का रंगु।
सगल तिआगै दुसट का संगु।
मन ते बिनसै सगला भरमु।
करि पूजै सगल पारब्रहमु।
साधसंगि पापा मलु खोवै।
तिसु भगउती की मति ऊतम होवै।
भगवंत की टहल करै नित नीति।
मनु तनु अरपै बिसन परीति।
हरि के चरन हिरदै बसावै।
नानक ऐसा भगउती भगवंत कउ पावै।

भगवान का वास्तविक उपासक (वह है, जिसके हृदय में) भगवान की भक्ति का प्रेम है और जो सब कुकर्मियों का संग छोड़ देता है; जिसके मन से हर प्रकार का भ्रम मिट जाता है, जो अकालपुरुष को सर्वत्र मौजूद जानकर पूजता है। उस भक्त की बुद्धि पवित्र होती है, जो गुरमुखों की संगति में रहकर पापों की मैल (मन से) दूर करता है। जो नित्य भगवान का स्मरण करता है, जो प्रभु–प्रेम पर अपना मन तथा तन बलिहारी कर देता है; जो प्रभु के चरण (सदा अपने) हृदय में बसाता है। हे नानक! ऐसा भक्त भगवान को प्राप्त कर लेता है।

सो पंडितु जो मनु परबोधै।
राम नामु आतम महि सोधै।
राम नाम सारु रसु पीवै।
उसु पंडित कै उपदेसि जगु जीवै।
हरि की कथा हिरदै बसावै।
सो पंडितु फिरि जोनि न आवै।
बेद पुरान सिम्रिति बूझै मूल।
सूखम महि जानै असथूलु।
चहु वरना कउ दे उपदेसु।
नानक उसु पंडित कउ सदा अदेसु।

पण्डित वह है जो अपने मन को शिक्षा देता है और प्रभु के नाम को अपने मन में खोजता है। उस पण्डित के उपदेश से (सारा) संसार आत्मिक जिन्दगी प्राप्त करता है, जो प्रभु-नाम का मीठा स्वाद चखता है। वह पण्डित दोबारा जन्म (मरण) में नहीं आता, जो अकालपुरुष (की गुणस्तुति) की बातें अपने हृदय में बसाता है। जो वेद-पुराण स्मृतियों (आदि धार्मिक पुस्तकों) का आदि (प्रभु को) समझता है, जो यह जानता कि यह सारा दिखता हुआ जगत् अदृश्य प्रभु के ही आसरे है; जो (ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र) चारों जातियों को शिक्षा देता है, हे नानक! (कह) उस पण्डित के समक्ष हम सदा सिर झुकाते हैं।

बीज मंत्रु सरब को गिआनु।
चहु वरना महि जपै कोऊ नामु।
जो जो जपै तिस की गति होइ।
साधसंगि पावै जनु कोइ।
करि किरपा अंतरि उर धारै।
पसु प्रेत मुघद पाथर कउ तारै।
सरब रोग का अउखदु नामु।
कलिआण रूप मंगल गुण गाम।
काहू जुगति कितै न पाईऐ धरमि।
नानक तिसु मिलै जिसु लिखिआ धुरि करमि।

चारों ही जातियों में कोई भी मनुष्य (प्रभु का) नाम जप (के देख) ले, नाम (दूसरे सब मन्त्रों का) आदि मन्त्र है और सबका ज्ञान (दाता) है। (पर) कोई बिरला मनुष्य सत्संगति में (रहकर) (इसे) प्राप्त करता है। पशु, निकम्मी आत्मा, मूर्ख, पत्थर (-दिल) (कोई भी होवे सब) को (नाम) पार कर देता है (यदि प्रभु) कृपा करके (उसके) हृदय में (नाम) टिका देवे। प्रभु का नाम सारे रोगों की औषधि है, प्रभु के गुण गाना सौभाग्य और सुख का रूप है। (पर यह नाम दूसरे) किसी ढंग से या किसी धार्मिक रस्म के करने से नहीं मिलता; हे नानक! (यह नाम) उस मनुष्य को मिलता है, जिस (के माथे पर) प्रभु के दरबार से (प्रभु की) कृपा अनुसार लिखा जाता है।

जिस कै मनि पारब्रहम का निवासु।
तिस का नामु सति रामदासु।
आतम रामु तिसु नदरी आइआ।
दास दसंतण भाइ़ तिनि पाइआ।
सदा निकटि निकटि हरि जानु।
सो दासु दरगह परवानु।
अपुने दास कउ आपि किरपा करै।
तिसु दास कउ सभ सोझी परै।
सगल संगि आतम उदासु।
ऐसी जुगति नानक रामदासु।

जिसके मन में अकालपुरुष बसता है, उस मनुष्य का नाम असली (अर्थों में) रामदास (प्रभु का सेवक) है; उसे सर्वव्यापक प्रभु दिखाई पड़ता है, दासों का दास होने के स्वभाव से उसने प्रभु को पाया है। जो (मनुष्य) सदा प्रभु को निकट जानता है, वह सेवक दरबार में स्वीकृत होता है। प्रभु उस सेवक पर आप कृपा करता है और उस सेवक को सारी सूझ हो जाती है। सारे परिवार में (रहता हुआ भी) वह भीतर से निर्लिप्त होता है; हे नानक! ऐसी (जीवन-) युक्ति से वह (असली) 'रामदास' (राम का दास बन जाता है)।

प्रभ की आगिया आतम हितावै।
जीवन मुकति सोऊ कहावै।
तैसा हरखु तैसा उसु सोगु।
सदा अनंदु तह नही बिओगु।
तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी।
तैसा अंम्रितु तैसी बिखु खाटी।
तैसा मानु तैसा अभिमानु।
तैसा रंकु तैसा राजानु।
जो वरताए साई जुगति।
नानक ओहु पुरखु कहीऐ जीवन मुकति।

जो मनुष्य प्रभु की रजा को मन में मीठी मानता है, वही जीता हुआ मुक्त कहलाता है। उसे सुख तथा दुःख एक जैसा है, उसे सदा आनन्द है (क्योंकि) वहाँ (प्रभु के चरणों से) बिछोह नहीं है। सोना तथा मिट्टी (भी उस मनुष्य के लिए) बराबर है, अमृत तथा कौड़ी उसके लिए एक समान है। उसके लिए आदर तथा अहंकार (का व्यवहार) एक समान है, कंगाल तथा बादशाह उसकी दृष्टि में बराबर हैं। जो (रजा प्रभु) दिखाता है, वही (उसके लिए) जिन्दगी का सही मार्ग है; हे नानक! वह मनुष्य जीवन्मुक्त कहा जा सकता है।

पारब्रहम के सगले ठाउ।
जितु जितु घरि राखै तैसा तिन नाउ।
आपे करन करावन जोगु।
प्रभ भावै सोई फुनि होगु।
पसरिओ आपि होइ अनत तरंग।
लखे न जाहि पारब्रहम के रंग।
जैसी मति देइ तैसा परगास।
पारब्रहम करता अबिनास।
सदा सदा सदा दइआल।
सिमरि सिमरि नानक भए निहाल।

सारे स्थान (शरीर-रूपी घर) अकालपुरुष के ही हैं, जिस-जिस स्थान पर जीवों को रखता है, वैसा उनका नाम (पड़ जाता है)। प्रभु आप ही (सब कुछ) करने की (और जीवों से) कराने की शक्ति रखता है, जो प्रभु को भला लगता है, वही होता है। (जिन्दगी की) अनगिनत लहरें बनकर (अकालपुरुष) आप सब तक मौजूद है, अकालपुरुष के खेल व्यक्त नहीं किए जा सकते। जैसी बुद्धि देता है, वैसा ही अवश्य (जीव के भीतर) होता है; अकालपुरुष (आप सब कुछ) करनेवाला है और कभी भी उसका मरण नहीं होता। प्रभु सदा कृपा करनेवाला है, हे नानक! (जीव उसे) सदा स्मरण कर (फूल के समान) खिले रहते हैं।

ੴ

सलोकु

उसतति करहि अनेक जन
अंतु न पारावार।
नानक रचना प्रभि रची
बहु बिधि अनिक प्रकार।

✣ श्लोक ✣

अनेक व्यक्ति प्रभु के गुणों का वर्णन करते हैं, लेकिन उन गुणों का ओर-छोर नहीं मिलता। हे नानक! (यह सारी) सृष्टि (उस) प्रभु ने कई किस्मों की होने के कारण कई विधियों से बनाई है।

असटपदी

कई कोटि होए पूजारी।
कई कोटि आचार बिउहारी।
कई कोटि भए तीरथ वासी।
कई कोटि बन भ्रमहि उदासी।
कई कोटि बेद के स्रोते।
कई कोटि तपीसुर होते।
कई कोटि आतम धिआनु धारहि।
कई कोटि कबि काबि बीचारहि।
कई कोटि नवतन नाम धिआवहि।
नानक करते का अंतु न पावहि।

❖ अष्टपदी ❖

(प्रभु द्वारा रची सृष्टि में) कई करोड़ प्राणी पुजारी हैं और कई करोड़ धार्मिक रीतिरस्म करनेवाले हैं; कई करोड़ (व्यक्ति) तीर्थों के निवासी हैं और कई करोड़ वैराग्य लेकर जंगलों में फिरते हैं; कई करोड़ जीव वेदों के सुननेवाले हैं और कई करोड़ महान् तपस्वी बने हुए हैं; कई करोड़ (मनुष्य) कवियों की रचनाएँ विचारते हैं; कई करोड़ व्यक्ति (प्रभु का) नित्य नया नाम-स्मरण करते हैं, (पर) हे नानक! उस कर्त्तार का कोई भेद नहीं पा सकते।

कई कोटि भए अभिमानी।
कई कोटि अंध अगिआनी।
कई कोटि किरपन कठोर।
कई कोटि अभिग आतम निकोर।
कई कोटि परदरब कउ हिरहि।
कई कोटि परदूखना करहि।
कई कोटि माइआ स्रम माहि।
कई कोटि परदेस भ्रमाहि।
जितु जितु लावहु तितु तितु लगना।
नानक करते की जानै करता रचना।

(इस जगत् रचना में) करोड़ों अहंकारी जीव और करोड़ों ही व्यक्ति बिल्कुल मूर्ख हैं; करोड़ों (मनुष्य) कंजूस तथा पत्थरमना हैं, और कई करोड़ बिल्कुल शुष्कमना (और संवेदनहीन) हैं, (जो किसी के दुःख पर) द्रवीभूत नहीं होते; करोड़ों व्यक्ति दूसरों का धन चुराते हैं और करोड़ों ही दूसरों की निंदा करते हैं; करोड़ों (मनुष्य) धन की (खातिर) मेहनत में लगे हैं और कई करोड़ दूसरे देशों में भटक रहे हैं; (हे प्रभु!) जिस-जिस काम में तुम लगाते हो, उस-उस काम में जीव लगे हैं। हे नानक! कर्त्तार की रचना (का भेद) कर्त्तार ही जानता है।

कई कोटि सिध जती जोगी।
कई कोटि राजे रस भोगी।
कई कोटि पंखी सरप उपाए।
कई कोटि पाथर बिरख निपजाए।
कई कोटि पवण पाणी बैसंतर।
कई कोटि देस भू मंडल।
कई कोटि ससीअर सूर नख्यत्र।
कई कोटि देव दानव इंद्र सिरि छत्र।
सगल समग्री अपनै सूति धारै।
नानक जिसुजिसु भावै तिसुतिसु निसतारै।

(इस सृष्टि में) करोड़ों सिद्ध, जितेन्द्रिय योगी और करोड़ों ही आनन्द प्राप्त करनेवाले राजा हैं; करोड़ों पक्षी तथा साँप (प्रभु ने) पैदा किए हैं, करोड़ों ही पत्थर तथा वृक्ष उगाए हैं; करोड़ों पानी तथा अग्नियाँ हैं, करोड़ों देश तथा धरतियों के चक्र हैं; कई करोड़ चन्द्रमा, सूर्य तथा तारे हैं, करोड़ों देवगण तथा इन्द्र हैं, जिनके सिर पर छत्र हैं; (इन) सारे (जीव-जन्तुओं के) पदार्थों को (प्रभु ने) अपने (हुक्म के) धागे में पिरोया हुआ है। हे नानक! जो-जो उसे अच्छा लगता है, उसे-उसे (प्रभु) पार कर लेता है।

कई कोटि राजस तामस सातक।
कई कोटि बेद पुरान सिम्रिति अरु सासत।
कई कोटि कीए रतन समुद।
कई कोटि नाना प्रकार जंत।
कई कोटि कीए चिर जीवे।
कई कोटि गिरी मेर सुवरन थीवे।
कई कोटि जख्य किंनर पिसाच।
कई कोटि भूत प्रेत सूकर म्रिगाच।
सभ ते नेरै सभहू ते दूरि।
नानक आपि अलिपतु रहिआ भरपूरि।

करोड़ों जीव (माया के तीन गुणों) सत्, रज तथा तम में हैं, करोड़ों (व्यक्ति) वेद, पुराण, स्मृतियों तथा शास्त्रों (के पढ़नेवाले) हैं; समुद्रों में करोड़ों रत्न पैदा कर दिए हैं और कई किस्मों के जीव-जन्तु बना दिए हैं; करोड़ों जीव लम्बी उम्र वाले पैदा किए हैं, करोड़ों ही सोने के सुमेर पर्वत बन गए हैं; करोड़ों ही यक्ष, किन्नर तथा पिशाच हैं और करोड़ों ही प्रेत सूअर तथा शेर हैं; (प्रभु) इनके निकट भी है और दूर भी। हे नानक! प्रभु सकल स्थान पर व्यापक भी है और निर्लिप्त भी।

कई कोटि पाताल के बासी।
कई कोटि नरक सुरग निवासी।
कई कोटि जनमहि जीवहि मरहि।
कई कोटि बहु जोनी फिरहि।
कई कोटि बैठत ही खाहि।
कई कोटि घालहि थकि पाहि।
कई कोटि कीए धनवंत।
कई कोटि माइआ महि चिंत।
जह जह भाणा तह तह राखे।
नानक सभु किछु प्रभ कै हाथे।

करोड़ों जीव पाताल में बसनेवाले हैं और करोड़ों ही नरकों तथा स्वर्गों में रहते हैं; करोड़ों जीव जन्मते हैं और करोड़ों जीव कई योनियों में भटक रहे हैं; करोड़ों जीव बैठे ही खाते हैं और करोड़ों (ऐसे हैं जो रोटी के लिए) मेहनत करते हैं और थककर टूट जाते हैं; करोड़ों जीव (प्रभु ने) धनवान बनाए हैं और करोड़ों (ऐसे हैं जिन्हें माया की) चिन्ता लगी हुई है। जहाँ-जहाँ चाहता है, जीवों को वहीं-वहीं रखता है। हे नानक! हरेक बात प्रभु के अपने हाथ में है।

कई कोटि भए बैरागी।
राम नाम संगि तिनि लिव लागी।
कई कोटि प्रभ कउ खोजंते।
आतम महि पारब्रहम लहंते।
कई कोटि दरसन प्रभ पिआस।
तिन कउ मिलिओ प्रभु अबिनास।
कई कोटि मागहि सतसंगु।
पारब्रहम तिन लागा रंगु।
जिन कउ होइ आपि सुप्रसंन।
नानक ते जन सदा धनि धंनि।

(इस रचना में) करोड़ों जीव वैरागी हैं, जिनकी सुरति अकालपुरुष के नाम के साथ लगी रहती है; करोड़ों व्यक्ति प्रभु को खोजते हैं और अपने भीतर अकालपुरुष को ढूँढ़ते हैं। करोड़ों जीवों को प्रभु के दर्शनों की इच्छा लगी रहती है, उन्हें अविनाशी प्रभु मिल पड़ता है। करोड़ों जीव सत्संग माँगते हैं, उन्हें अकालपुरुष का प्रेम रहता है। हे नानक! वे मनुष्य सदा भाग्यशाली हैं, जिन पर प्रभु आप प्रसन्न होता है।

कई कोटि खाणी अरु खंड।
कई कोटि अकास ब्रहमंड।
कई कोटि होए अवतार।
कई जुगति कीनो बिसथार।
कई बार पसरिओ पासार।
सदा सदा इकु एकंकार।
कई कोटि कीने बहुत भाति।
प्रभ ते होए प्रभ माहि समाति।
ता का अंतु न जानै कोइ।
आपे आपि नानक प्रभु सोइ।

(पृथ्वी के नौ) खण्डों और (चार) दिशाओं में करोड़ों ही जीव उत्पन्न हुए हैं, तमाम आकाशों, ब्रंह्माण्डों में करोड़ों ही जीव हैं; करोड़ों ही प्राणी पैदा हो रहे हैं; कई तरीकों से प्रभु ने जगत् की रचना की है, (दोबारा इसे समेटकर) सदा एक आप ही हो जाता है; प्रभु ने कई प्रकार के करोड़ों ही जीव पैदा किए हैं, जो प्रभु से पैदा होकर फिर प्रभु में ही लीन हो जाते हैं। उस प्रभु का अन्त कोई व्यक्ति नहीं जानता; (क्योंकि) हे नानक! वह प्रभु (अपने जैसा) आप ही है।

कई कोटि पारब्रहम के दास।
तिन होवत आतम परगास।
कई कोटि तत के बेते।
सदा निहारहि एको नेत्रे।
कई कोटि नाम रसु पीवहि।
अमर भए सद सद ही जीवहि।
कई कोटि नाम गुन गावहि।
आतम रसि सुखि सहजि समावहि।
अपुने जन कउ सासि सासि समारे।
नानक ओइ परमेसुर के पिआरे।

(इस जगत्-रचना में) करोड़ों जीव प्रभु के सेवक हैं, उनकी आत्मा में (प्रभु का) प्रकाश हो जाता है; करोड़ों जीव (जगत् के) तत्त्व अकालपुरुष के जानकार हैं, जो सदा एक प्रभु को आँखों से (सर्वत्र) देखते हैं; करोड़ों व्यक्ति प्रभु-नाम का आनन्द प्राप्त करते हैं, वे जन्म-मरण से रहित होकर सदा ही जीते रहते हैं। करोड़ों मनुष्य प्रभु-नाम के गुण गाते हैं, वें आत्मिक आनन्द, सुख तथा स्थिर अवस्था में टिके रहते हैं। प्रभु अपने भक्तों को प्रत्येक पल स्मरण रखता है, (क्योंकि) हे नानक! वे भक्त प्रभु के प्यारे होते हैं।

ੴ

सलोकु

करण कारण प्रभु एकु है
दूसर नाही कोइ।
नानक तिसु बलिहारणै
जलि थलि महीअलि सोइ।

✣ श्लोक ✣

(इस सारे) जगत् का (मूल-) कारण (सृजनकर्त्ता) एक अकालपुरुष ही है, कोई दूसरा नहीं। हे नानक! (मैं) उस प्रभु पर बलिहारी हूँ, जो जल, थल, पृथ्वी के तल पर (विद्यमान है)।

✣ असटपदी ✣

करन करावन करनै जोगु।
जो तिसु भावै सोई होगु।
खिन महि थापि उथापनहारा।
अंतु नही किछु पारावारा।
हुकमे धारि अधर रहावै।
हुकमे उपजै हुकमि समावै।
हुकमे ऊच नीच बिउहार।
हुकमे अनिक रंग परकार।
करि करि देखै अपनी वडिआई।
नानक सभ महि रहिआ समाई।

❖ अष्टपदी ❖

प्रभु (सब कुछ) करने की सामर्थ्य रखता है, और (जीवों को) काम करने के लिए प्रेरित करने योग्य भी है, वही कुछ होता है, जो उसे अच्छा लगता है। पल भर में इस जगत् को पैदा करके नाश भी करनेवाला है, (उसकी शक्ति) का कोई ओर-छोर नहीं है। (सृष्टि को अपने) हुक्म में पैदा करके बिना किसी आसरे के टिकाए रखता है, (जगत् उसके) हुक्म में पैदा होता है और हुक्म में लीन हो जाता है। उच्च और निम्न व्यक्तियों का प्रयोग भी उसके हुक्म-अनुसार ही है, अनेकों प्रकार के खेल-तमाशे उसके हुक्म-अनुसार हो रहे हैं। अपनी बुजुर्गी (के काम) कर-करके आप ही देख रहा है। हे नानक! प्रभु सब जीवों में व्यापक है।

प्रभ भावै मानुख गति पावै।
प्रभ भावै ता पाथर तरावै।
प्रभ भावै बिनु सास से राखै।
प्रभ भावै ता हरि गुण भाखै।
प्रभ भावै ता पतित उधारै।
आपि करै आपन बीचारै।
दुहा सिरिआ का आपि सुआमी।
खेलै बिगसै अंतरजामी।
जो भावै सो कार करावै।
नानक द्रिसटी अवरु न आवै।

यदि प्रभु को भाए तो मनुष्य को ऊँची आत्मिक अवस्था देता है और पत्थर (-दिलों) को भी पार कर लेता है, यदि प्रभु चाहे तो श्वासों के बिना भी प्राणी को (मौत से) बचाकर रखता है, उसकी कृपा होवे तो ही जीव प्रभु के गुण गाता है। यदि अकालपुरुष की रजा होवे तो मार्ग में गिरे हुए व्यक्तियों को (विकारों से) बचा लेता है; जो कुछ करता है, अपनी सलाह-अनुसार करता है। प्रभु आप ही लोक-परलोक का मालिक है, वह सबके मन की जाननेवाला आप जगत्-खेल खेलता है और (इसे देखकर) प्रसन्न होता है। जो इसे अच्छा लगता है, वही काम करता है। हे नानक! (उस जैसा दूसरा कोई दिखाई नहीं देता)।

कहु मानुख ते किआ होइ आवै।
जो तिसु भावै सोई करावै।
इस कै हाथि होइ ता सभु किछु लेइ।
जो तिसु भावै सोई करेइ।
अनजानत बिखिआ महि रचै।
जे जानत आपन आप बचै।
भरमे भूला दह दिस धावै।
निमख माहि चारि कुंट फिरि आवै।
करि किरपा जिसु अपनी भगति देइ।
नानक ते जन नामि मिलेइ।

कहो, मनुष्य से (अपने आप) कौन सा काम हो सकता है? जो प्रभु को अच्छा लगता है, वही (जीव से) कराता है। इस मनुष्य के वश में होवे तो हरेक चीज सँभाल ले, (पर) प्रभु वही कुछ करता है, जो उसे भाता है। मूर्खता के कारण मनुष्य माया में लीन हो जाता है, यदि बुद्धिमान होवे तो अपने आप (इससे) बचा रहे; (पर इसका मन) भ्रम में भूला हुआ (माया की खातिर) दसों दिशाओं में दौड़ता है, पल भर में चारों कोनों में भाग-दौड़ आता है। (प्रभु) कृपा करके जिस-जिस मनुष्य को अपनी भक्ति देता है, हे नानक! वे मनुष्य नाम में टिके रहते हैं।

खिन महि नीच कीट कउ राज।
पारब्रहम गरीब निवाज।
जा का द्रिसटि कछू न आवै।
तिसु ततकाल दह दिस प्रगटावै।
जा कउ अपुनी करै बखसीस।
ता का लेखा न गनै जगदीस।
जीउ पिंडु सभ तिस की रासि।
घटि घटि पूरन ब्रहम प्रगास।
अपनी बणत आपि बनाई।
नानक जीवै देखि बडाई।

क्षण में प्रभु कीड़े (जैसे) निम्न (मनुष्य) को राज्य देता है, प्रभु गरीबों पर कृपा करनेवाला है। जिस मनुष्य का कोई गुण दिखाई नहीं देता, उसे पल भर में दसों दिशाओं में प्रकट कर देता है। जिस मनुष्य पर जगत् का स्वामी प्रभु अपनी कृपा करता है, उसके (कर्मों का) लेखा नहीं गिनता। यह आत्मा और शरीर उस प्रभु की दी हुई पूँजी है, हरेक शरीर में व्यापक प्रभु का ही प्रकाश है। यह (जगत्-) रचना उसने आप रची है। हे नानक! अपनी (इस) बुजुर्गी को आप देखकर (वह) खुश हो रहा है।

इस का बलु नाही इसु हाथ।
करन करावन सरब को नाथ।
आगिआकारी बपुरा जीउ।
जो तिसु भावै सोइ फुनि थीउ।
कबहू ऊच नीच महि बसै।
कबहू सोग हरख रंगि हसै।
कबहू निंद चिंद बिउहार।
कबहू ऊभ अकास पइआल।
कबहू बेता ब्रहम बीचार।
नानक आपि मिलावणहार।

इस (जीव) की शक्ति इसके अपने हाथ में नहीं है, सब जीवों का मालिक प्रभु आप सब कुछ करने-कराने के योग्य है। बेचारा जीव प्रभु के हुक्म में ही चलनेवाला है, (क्योंकि) वही होता है जो उस प्रभु को अच्छा लगता है। (प्रभु आप) कभी उच्च व्यक्तियों और कभी निम्न व्यक्तियों में प्रकट हो रहा है, कभी चिन्ता में है और कभी खुशी की मौज में हँस रहा है; कभी (दूसरों की) निन्दा करने का व्यवहार बनाए बैठा है। कभी (खुशी के कारण) आकाश में ऊँचा (चढ़ता है) कभी (चिन्ता के कारण) पाताल में (गिरा पड़ा है); कभी आप ही ईश्वरीय विचार का जानकार है। हे नानक! जीवों को अपने में मिलाने वाला आप ही है।

कबहू निरति करै बहु भाति।
कबहू सोइ रहै दिनु राति।
कबहू महा क्रोध बिकराल।
कबहूं सरब की होत रवाल।
कबहू होइ बहै बड राजा।
कबहु भेखारी नीच का साजा।
कबहू अपकीरति महि आवै।
कबहू भला भला कहावै।
जिउ प्रभु राखै तिव ही रहै।
गुर प्रसादि नानक सचु कहै।

(प्रभु जीवों में व्यापक होकर) कभी कई प्रकार के नाच कर रहा है, कभी दिन-रात सोया रहता है। कभी क्रोध (में आकर) बड़ा डरावना (लगता है), कभी जीवों के चरणों की धूलि (बना रहता है); कभी बड़ा राजा बन बैठता है, कभी एक निम्न जाति के भिखारी का स्वांग (बना रखा है); कभी अपनी बदनामी करा रहा है, कभी भला कहलवा रहा है, जीव उसी प्रकार जीवन व्यतीत करता है, जैसे प्रभु कराता है। हे नानक! (कोई विरला मनुष्य) गुरु की कृपा से प्रभु को स्मरण करता है।

कबहू होइ पंडितु करे बख्यानु।
कबहू मोनि धारी लावै धिआनु।
कबहू तट तीरथ इसनान।
कबहू सिध साधिक मुखि गिआन।
कबहू कीट हसति पतंग होइ जीआ।
अनिक जोनि भरमै भरमीआ।
नाना रूप जिउ स्वागी दिखावै।
जिउ प्रभ भावै तिवै नचावै।
जो तिसु भावै सोई होइ।
नानक दूजा अवरु न कोइ।

(सर्वव्यापक प्रभु) कभी पण्डित बनकर (दूसरों को) उपदेश कर रहा है, कभी मौनी साधू बनकर समाधि लगाए बैठा है; कभी तीर्थों के किनारे स्नान कर रहा है, कभी सिद्ध, साधक (के रूप में) मुँह से ज्ञान की बातें करता है; कभी कीड़े, हाथी, पतंगा (आदि) जीव बना रहता है और (अपना ही) भरमाया हुआ कई योनियों में भटक रहा है; बहुरूपिए के समान कई प्रकार के रूप दिखा रहा है; जैसे प्रभु को अच्छा लगता है, वैसे (ही जीवों को) नचाता है। वही होता है जो उस (मालिक) को अच्छा लगता है। हे नानक! (उस जैसा) कोई दूसरा नहीं है।

कबहू साधसंगति इहु पावै।
उसु असथान ते बहुरि न आवै।
अंतरि होइ गिआन परगासु।
उसु असथान का नही बिनासु।
मन तन नामि रते इक रंगि।
सदा बसहि पारब्रहम कै संगि।
जिउ जल महि जलु आइ खटाना।
तिउ जोती संगि जोति समाना।
मिटि गए गवन पाए बिस्राम।
नानक प्रभ कै सद कुरबान।

(जब) कभी (प्रभु का अंश) यह जीव सत्संग में पहुँचता है, तो उस स्थान से मुड़कर वापिस नहीं आता; (क्योंकि) इसके भीतर प्रभु के ज्ञान का प्रकाश हो जाता है (और) उस (ज्ञान के प्रकाश वाली) हालत का नाश नहीं होता; (जिन मनुष्यों के) तन, मन प्रभु के नाम तथा प्रेम में अनुरक्त रहते हैं, वे सदा प्रभु के समीप (उसके दरबार में) बसते हैं। जैसे पानी में पानी आ मिलता है, वैसे (सत्संग में टिके हुए की) आत्मा प्रभु की ज्योति में लीन हो जाती है, उसके (जन्म-मरण के) चक्र समाप्त हो जाते हैं, (प्रभु-चरणों में) उसे ठिकाना मिल जाता है। हे नानक! प्रभु पर सदा बलिहारी जाएँ।

ੴ

सलोकु

सुखी बसै मसकीनीआ
आपु निवारि तले।
बड़े बड़े अहंकारीआ
नानक गरबि गले।

✣ श्लोक ✣

विनम्र स्वभाव वाला व्यक्ति आपा-भाव दूर कर, और विनीत रहकर सुखी रहता है, (पर) बड़े-बड़े अहंकारी मनुष्य, हे नानक! अहंकार में ही गल जाते हैं।

असटपदी

जिस कै अंतरि राज अभिमानु।
सो नरकपाती होवत सुआनु।
जो जानै मै जोबनवंतु।
सो होवत बिसटा का जंतु।
आपस कउ करमवंतु कहावै।
जनमि मरै बहु जोनि भ्रमावै।
धन भूमि का जो करै गुमानु।
सो मूरखु अंधा अगिआनु।
करि किरपा जिसकै हिरदै गरीबी बसावै।
नानक ईहा मुकतु आगै सुखु पावै।

❖ अष्टपदी ❖

जिस मनुष्य के मन में राज्य का अभिमान है, वह कुत्ता नरक में पड़कर दण्डित होता है। यदि मनुष्य अपने आपको अत्यंत सुन्दर समझता है, वह विष्ठा का ही कीड़ा होता है। जो अपने आपको शुभ कर्मों का करनेवाला कहलाता है, वह सदा जन्मता-मरता है, कई योनियों में भटकता फिरता है। जो मनुष्य धन और धरती का अहंकार करता है, वह मूर्ख है, 'बड़ा दुष्ट है। (ईश्वर) कृपा करके जिस मनुष्य के दिल में विनभ्र (स्वभाव) देता है, हे नानक! (वह मनुष्य) जीवन में विकारों से बचा रहता है और परलोक में सुख पाता है।

धनवंता होइ करि गरबावै।
त्रिण समानि कछु संगि न जावै।
बहु लसकर मानुख ऊपरि करे आस।
पल भीतरि ता का होइ बिनास।
सभ ते आप जानै बलवंतु।
खिन महि होइ जाइ भसमंतु।
किसै न बदै आपि अहंकारी।
धरमराइ तिसु करे खुआरी।
गुर प्रसादि जा का मिटै अभिमानु।
सो जनु नानक दरगह परवानु।

मनुष्य धनवान होकर अभिमान करता है, (पर उसके) साथ (अन्तिम समय में) एक तिनके के बराबर चीज नहीं जाती। अत्यधिक लश्कर तथा आदमियों पर आशा लगाए रखता है, (पर) पल मात्र में उसका नाश हो जाता है। मनुष्य अपने आपको सबसे बली समझता है, पर (अन्तिम समय) एक क्षण में जलकर राख हो जाता है। (जो व्यक्ति) आप (इतना) अहंकारी हो जाता है कि किसी की परवाह नहीं करता, धर्मराज (अन्तिम समय में) उसकी दुर्गति करता है। सतिगुरु की दया से जिसका अहंकार मिटता है, वह मनुष्य, हे नानक! प्रभु के दरबार में सम्मानित होता है।

कोटि करम करै हउ धारे।
स्रमु पावै सगले बिरथारे।
अनिक तपसिआ करे अहंकार।
नरक सुरग फिरि फिरि अवतार।
अनिक जतन करि आतम नही द्रवै।
हरि दरगह कहु कैसे गवै।
आपस कउ जो भला कहावै।
तिसहि भलाई निकटि न आवै।
सरब की रेन जा का मनु होइ।
कहु नानक ता की निरमल सोइ।

(जो मनुष्य) करोड़ों धार्मिक कामों का अहंकार करे तो वे सारे काम व्यर्थ हैं, (उसे उन कार्यों से) थकावट ही मिलती है। अनेकों तप के साधन करके यदि इनका अभिमान करे, (तो वह भी) नरक, स्वर्ग में ही बार-बार जन्मता है। अनेकों यत्न करने से यदि हृदय विनम्र नहीं होता, तो कहो, वह मनुष्य प्रभु के दरबार में कैसे पहुँच सकता है? यदि मनुष्य अपने आपको भला कहता है, भलाई उसके पास भी नहीं फटकती। जिस मनुष्य का मन सब के चरणों की धूलि हो जाता है, कहो, हे नानक! उस मनुष्य की शोभा में अत्यन्त वृद्धि होती है।

जब लगु जानै मुझ ते कछु होइ।
तब इस कउ सुखु नाही कोइ।
जब इह जानै मै किछु करता।
तब लगु गरभ जोनि महि फिरता।
जब धारै कोऊ बैरी मीतु।
तब लगु निहचलु नाही चीतु।
जब लगु मोह मगन संगि माइ।
तब लगु धरमराइ देइ सजाइ।
प्रभ किरपा ते बंधन तूटै।
गुर प्रसादि नानक हउ छूटै।

मनुष्य जब तक यह समझता है कि मुझ से कुछ हो सकता है, तब तक इसे कोई सुख नहीं होता। जब तक यह समझता है कि मैं कुछ करता हूँ, तब तक योनियों में भटकता रहता है। जब तक मनुष्य किसी को वैरी तथा किसी को मित्र समझता है, तब तक इसका मन ठिकाने पर नहीं आता। जब तक मनुष्य माया के मोह में डूबा रहता है, तब तक इसे धर्मराज दण्ड देता है। (माया के) बन्धन प्रभु की कृपा से टूटते हैं, हे नानक! मनुष्य की अहंभावना गुरु की कृपा से समाप्त होती है।

सहस खटे लख कउ उठि धावै।
त्रिपति न आवै माइआ पाछै पावै।
अनिक भोग बिखिआ के करै।
नह त्रिपतावै खपि खपि मरै।
बिना संतोख नही कोऊ राजै।
सुपन मनोरथ ब्रिथे सभ काजै।
नाम रंगि सरब सुखु होइ।
बडभागी किसै परापति होइ।
करन करावन आपे आपि।
सदा सदा नानक हरि जापि।

(मनुष्य) हजारों (रुपए) कमाता है, लाखों (रुपयों) के लिए भाग-दौड़ करता है; माया को जमा किए जाता है, (पर) तृप्त नहीं होता। माया के अनेक आनन्द प्राप्त करता है, तसल्ली नहीं होती, (भोगों में लगा रहता है तथा) बहुत दुखी होता है। यदि भीतर साँस न होवे, तो कोई (मनुष्य) तृप्त नहीं होता, जैसे स्वप्नों से कोई लाभ नहीं होता, वैसे ही समस्त काम तथा इच्छाएँ व्यर्थ हैं। प्रभु के नाम की मौज में (ही) सारा सुख है, (और यह सुख) किसी भाग्यशाली को ही मिलता है, (जो) प्रभु आप सब कुछ करने तथा (जीवों से) कराने के योग्य है, हे नानक! उस प्रभु को सदा स्मरण कर।

करन करावन करनैहारु।
इस कै हाथि कहा बीचारु।
जैसी द्रिसटि करे तैसा होइ।
आपे आपि आपि प्रभु सोइ।
जो किछु कीनो सु अपनै रंगि।
सभ ते दूरि सभहू कै संगि।
बूझै देखै करै बिबेक।
आपहि एक आपहि अनेक।
मरै न बिनसै आवै न जाइ।
नानक सद ही रहिआ समाइ।

विचार कर देख ले, जीव के वश में कुछ भी नहीं है; प्रभु आप ही सब कुछ करने योग्य है तथा (जीवों से) कराने योग्य है। प्रभु ऐसी दृष्टि (व्यक्ति की ओर) करता है कि व्यक्ति वैसा ही बन जाता है, वह प्रभु आप ही आप होता है। जो कुछ उसने बनाया है, अपनी मौज में बनाया है; सब जीवों के साथ भी है और सबसे अलग भी है। प्रभु आप ही एक है और आप ही अनेक रूप धारण कर रहा है, सब कुछ समझता है, देखता है और पहचानता है। वह न कभी मरता है, न विनष्ट होता है; न जन्मता है, न मरता है; हे नानक! प्रभु सदा ही अपने आप में टिका रहता है।

आपि उपदेसै समझै आपि।
आपे रचिआ सभ कै साथि।
आपि कीनो आपन बिसथारु।
सभु कछु उस का ओहु करनैहारु।
उस ते भिंन कहहु किछु होइ।
थान थनंतरि एकै सोइ।
अपुने चलित आपि करणैहार।
कउतक करै रंग आपार।
मन महि आपि मन अपुने माहि।
नानक कीमति कहनु न जाइ।

प्रभु आप ही सब जीवों के साथ मिला हुआ है, (इसलिए वह) आप ही शिक्षा देता है और आप ही (उस शिक्षा को) समझता है। अपना विस्तार उसने आप ही बनाया है, (जगत् की) हरेक वस्तु उसकी बनाई हुई है, वह बनाने योग्य है। बताओ, उससे अलग कुछ हो सकता है? सर्वत्र वह प्रभु आप ही (मौजूद) है। अपने खेल आप ही करने योग्य है, अनन्त रंगों के तमाशे करता है। (जीवों के) मन में आप बस रहा है, (जीवों को) अपने मन में टिकाए बैठा है; हे नानक! उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

सति सति सति प्रभु सुआमी।
गुर परसादि किनै वखिआनी।
सचु सचु सचु सभु कीना।
कोटि मधे किनै बिरलै चीना।
भला भला भला तेरा रूप।
अति सुंदर अपार अनूप।
निरमल निरमल निरमल तेरी बाणी।
घटि घटि सुनी स्रवन बख्याणी।
पवित्र पवित्र पवित्र पुनीत।
नामु जपै नानक मनि प्रीति।

(सबका) मालिक प्रभु सदा स्थिर रहनेवाला है—गुरु की कृपा से किसी विरले ने (यह बात) कही है। जो कुछ उसने बनाया है वह भी पूर्ण है— यह बात करोड़ों में किसी विरले ने पहचानी है। हे अत्यन्त सुन्दर, अनन्त तथा अप्रतिम प्रभु! तेरा रूप कितना प्यारा है! तेरी बोली भी मधुर है, हर एक शरीर में कानों के द्वारा सुनी जा रही है, जिह्वा से कही जा रही है। हे नानक! (जो ऐसे प्रभु का) नाम प्रीति के साथ मन में जपता है, वह पवित्र ही पवित्र हो जाता है।

ੴ

सलोकु

संत सरनि जो जनु परै
सो जनु उधरनहार।
संत की निंदा नानका
बहुरि बहुरि अवतार।

✣ श्लोक ✣

जो मनुष्य संतों का शरण लेता है, वह माया के बन्धनों से बच जाता है; (पर) हे नानक! संतों की निंदा करने से बार-बार जन्म लेना पड़ता है, (अर्थात् जन्म-मरण के चक्र में पड़ जाता है)।

असटपदी

संत कै दूखनि आरजा घटै।
संत कै दूखनि जम ते नही छुटै।
संत कै दूखनि सुखु सभु जाइ।
संत कै दूखनि नरक महि पाइ।
संत कै दूखनि मति होइ मलीन।
संत कै दूखनि सोभा ते हीन।
संत कै हते कउ रखै न कोइ।
संत कै दूखनि थान भ्रसटु होइ।
संत क्रिपाल क्रिपा जे करै।
नानक संतसंगि निंदकु भी तरै।

❖ अष्टपदी ❖

संतों की निंदा करने से (मनुष्य की) उम्र (व्यर्थ ही) बीत जाती है, (क्योंकि) संत की निंदा करने से मनुष्य यमों से बच नहीं सकता। संत की निंदा करने से सारा (ही) सुख (नष्ट हो) जाता है और मनुष्य नरक में पड़ जाता है। संत की निंदा करने से (मनुष्य की) मति मैली हो जाती है और (जगत् में) मनुष्य शोभा से खाली रह जाता है। संत से तिरस्कृत व्यक्ति की कोई मनुष्य सहायता नहीं कर सकता, (क्योंकि) संत की निंदा करने से (निंदक का) हृदय गंदा हो जाता है। (पर) यदि कृपालु संत कृपा करे, तो हे नानक! संत की संगति में निंदक भी (पापों से) बच जाता है।

संत कै दूखन ते मुखु भवै।
संतन कै दूखनि काग जिउ लवै।
संतन कै दूखनि सरप जोनि पाइ।
संत कै दूखनि त्रिगद जोनि किरमाइ।
संतन कै दूखनि त्रिसना महि जलै।
संत कै दूखनि सभु को छलै।
संत कै दूखनि तेजु सभु जाइ।
संत कै दूखनि नीचु नीचाइ।
संत दोखी का थाउ को नाहि।
नानक संत भावै ता ओइ भी गति पाहि।

संत की निंदा करने से (निंदक का) चेहरा ही भ्रष्ट हो जाता है, (और निंदक) (स्थान-स्थान पर) कौए के समान निंदा करता है। संत की निंदा करने से मनुष्य सर्प की योनि में जा पड़ता है, और, कृमि आदि की निम्न योनियों में (भटकता है)। संत की निंदा के कारण (निंदक) तृष्णा (की अग्नि) में जलता है, और हरेक मनुष्य को धोखा देता फिरता है। संत की निंदा करने से मनुष्य का सारा तेज-प्रताप नष्ट हो जाता है और (निंदक) महानीच बन जाता है। संतों की निंदा करनेवालों को कोई आसरा नहीं रहता; (हाँ) हे नानक! यदि संतों को भाए तो निंदक भी उत्तम अवस्था तक पहुँच जाते हैं।

संत का निंदकु महा अतताई।
संत का निंदकु खिनु टिकनु न पाई।
संत का निंदकु महा हतिआरा।
संत का निंदकु परमेसुरि मारा।
संत का निंदकु राज ते हीनु।
संत का निंदकु दुखीआ अरु दीनु।
संत के निंदक कउ सरब रोग।
संत के निंदक कउ सदा बिजोग।
संत की निंदा दोख महि दोखु।
नानक संत भावै ता उसका भी होइ मोखु।

संत की निंदा करनेवाला मनुष्य सदा तूफान उठाए रहता और एक पल भर भी आराम नहीं लेता। संत का निंदक बड़ा क्रूर बन जाता है और परमात्मा की ओर से तिरस्कृत होता है। संत का निंदक राज्य (के सुखों से) खाली रहता है (सदा) दुखी तथा आतुर रहता है। संतों की निंदा करनेवाले को सारे रोग लगते हैं, (क्योंकि) उसे (सुखों के स्रोत प्रभु से) सदा विछोह रहता है। संतों की निंदा करनी नीचता है। हे नानक! यदि संतों को भाए तो उसका भी छुटकारा हो जाता है।

संत का दोखी सदा अपवितु।
संत का दोखी किसै का नही मितु।
संत के दोखी कउ डानु लागै।
संत के दोखी कउ सभ तिआगै।
संत का दोखी महा अहंकारी।
संत का दोखी सदा बिकारी।
संत का दोखी जनमै मरै।
संत की दूखना सुख ते टरै।
संत के दोखी कउ नाही ठाउ।
नानक संत भावै ता लए मिलाइ।

संत का निंदक सदा मैले मन वाला है, (इसलिए) वह (कभी) किसी का मित्र नहीं बनता। (अन्तिम समय में) संत के निंदक को (धर्मराज से) सजा मिलती है और सारे उसका साथ छोड़ जाते हैं। संत की निंदा करनेवाला बड़ा अहंकारी बन जाता है और सदा कुकर्म करता है। संत का निंदक जन्मता-मरता रहता है, और संत की निंदा के कारण सुखों से खाली जाता है। संत के निंदक को कोई सहारा नहीं मिलता, (पर हाँ), हे नानक! यदि संत चाहे तो अपने साथ उस (निंदक) को मिला लेता है।

संत का दोखी अध बीच ते टूटै।
संत का दोखी कितै काजि न पहूचै।
संत के दोखी कउ उदिआन भ्रमाईऐ।
संत का दोखी उझड़ि पाईऐ।
संत का दोखी अंतर ते थोथा।
जिउ सास बिना मिरतक की लोथा।
संत के दोखी की जड़ किछु नाहि।
आपन बीजि आपे ही खाहि।
संत के दोखी कउ अवरु न राखनहारु।
नानक संत भावै ता लए उबारि।

संत का निंदक किसी काम में पूर्ण नहीं उतरता, बीच में ही रह जाता है। संत के निंदक को जंगलों में दुखी किया जाता है और (मार्ग से भ्रष्ट करके) गलत मार्ग पर डाल दिया जाता है। जैसे प्राणों के बिना मुर्दा मांस है, वैसे ही संत का निंद्रक भीतर से खाली होता है। संत के निंदकों की (नेक कमाई तथा स्मरण द्वारा) कोई पक्की नींव नहीं होती, वे आप ही निंदा की कमाई करके आप ही (उसका निम्नफल) खाते हैं। संतों के निंदक को कोई दूसरा मनुष्य बचा नहीं सकता, (पर) हे नानक! यदि संत चाहे तो (निंदक को निंदा के स्वभाव से) बचा सकता है।

संत का दोखी इउ बिललाइ।
जिउ जल बिहून मछुली तड़फड़ाइ।
संत का दोखी भूखा नही राजै।
जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै।
संत का दोखी छुटै इकेला।
जिउ बूआड़ु तिलु खेत माहि दुहेला।
संत का दोखी धरम ते रहत।
संत का दोखी सद मिथिआ कहत।
किरतु निंदक का धुरि ही पइआ।
नानक जो तिसु भावै सोई थिआ।

संत का निंदक ऐसे रोता है, जैसे पानी के बिना मछली तड़फती है। संत का निंदक तृष्णा के कारण कभी तृप्त नहीं होता, जैसे आग ईंधन से तृप्त नहीं होती। जैसे भीतर से जला हुआ तिल का पौधा खेत में ही बेकार पड़ा रहता है, वैसे ही संत का निंदक अकेला परित्यक्त होकर पड़ा रहता है, (कोई उसके निकट नहीं आता), संत का निंदक धर्म से भ्रष्ट होता है और सदा झूठ बोलता है। (पर) पहली की हुई निंदा का यह फल (रूपी स्वभाव) निंदक का शुरू से ही चला आ रहा है। हे नानक! (यह मालिक की रजा है) जो उसे अच्छा लगता है, वही होता है।

संत का दोखी बिगड़ रूपु होइ जाइ।
संत के दोखी कउ दरगह मिलै सजाइ।
संत का दोखी सदा सहकाईऐ।
संत का दोखी न मरै न जीवाईऐ।
संत के दोखी की पुजै न आसा।
संत का दोखी उठि चलै निरासा।
संत कै दोखि न त्रिसटै कोइ।
जैसा भावै तैसा कोई होइ।
पइआ किरतु न मेटै कोइ।
नानक जानै सचा सोइ।

संतों का निंदक तिरस्कृत होता है, प्रभु की दरगाह (दरबार) में उसे सजा मिलती है। संतों का निंदक सदा उतावला रहता है, वह न मृतकों में और न जीवितों में होता है। उसकी आशा कभी पूर्ण नहीं होती, जगत् से वह निराश ही चला जाता है। जैसे आदमी की नीयत (इच्छा) होती है, वैसा उसका स्वभाव बन जाता है, (इसलिए) संत की निंदा करने से कोई मनुष्य (निंदा की) इस प्यास से बचता नहीं, (बचे भी कैसे?) पूर्वकृत (निम्न) कमाई से एकत्रित (स्वभाव-रूपी) फल को कोई मिटा नहीं सकता। हे नानक! (इस भेद को) वह सच्चा प्रभु जानता है।

सभ घट तिस के ओहु करनैहारु।
सदा सदा तिस कउ नमसकारु।
प्रभ की उसतति करहु दिनु राति।
तिसहि धिआवहु सासि गिरासि।
सभु कछु वरतै तिसका कीआ।
जैसा करे तैसा को थीआ।
अपना खेलु आपि करनैहारु।
दूसर कउनु कहै बीचारु।
जिसनो क्रिपा करै तिसु आपन नामु देइ।
बडभागी नानक जन सेइ।

सारे जीव-जन्तु उस प्रभु के हैं, वह सब कुछ करने के योग्य है, सदा उस प्रभु के समक्ष सिर झुकाओ। दिन-रात प्रभु के गुण गाओ, प्रत्येक साँस उसे स्मरण करो। (जगत् में) हर एक क्रीड़ा उसी की रची हुई क्रियान्वित है, प्रभु (जीव को) जैसा बनाता है, वैसा हर एक जीव बन जाता है, (जगत्-रूपी) अपना खेल आप ही करने योग्य है। दूसरा कौन उसे सलाह दे सकता है? जिस-जिस जीव पर कृपा करता है, उसे-उसे अपना नाम देता है; (और) हे नानक! वे मनुष्य भाग्यशाली हो जाते हैं।

ੴ

सलोकु

तजहु सिआनप सुरि जनहु
सिमरहु हरि हरि राइ।
एक आस हरि मन रखहु
नानक दूखु भरमु भउ जाइ।

✣ श्लोक ✣

हे भले मनुष्यों! चतुराई छोड़ो और अकालपुरुष को स्मरण करो; केवल प्रभु की आस मन में रखो। हे नानक! (इस प्रकार) दुःख, भ्रम और भय दूर हो जाता है।

असटपदी

मानुख की टेक ब्रिथी सभ जानु।
देवन कउ एकै भगवानु।
जिस कै दीए रहै अघाइ।
बहुरि न त्रिसना लागै आइ।
मारै राखै एको आपि।
मानुख कै किछु नाही हाथि।
तिस का हुकमु बूझि सुखु होइ।
तिस का नामु रखु कंठि पराइ।
सिमरि सिमरि सिमरि प्रभु सोइ।
नानक बिघनु न लागै कोइ।

❖ अष्टपदी ❖

(हे मन!) किसी मनुष्य का आसरा बिल्कुल बेकार समझ, एक अकालपुरुष ही (सब जीवों को) देने योग्य है; जिसके देने से (मनुष्य) तृप्त रहता है और दोबारा उसे लालच आकर नहीं दबाता। प्रभु आप ही जीवों को मारता है, (अथवा) पालता है, मनुष्य के वश कुछ नहीं है, (इसलिए) उस मालिक का हुक्म समझकर सुख होता है। (हे मन!) उसका नाम हरवक्त याद कर। उस प्रभु को सदा स्मरण कर। हे नानक! (स्मरण के प्रभाव से) (जिन्दगी की यात्रा में) कोई रुकावट नहीं पड़ती।